ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 19 नवम्बर 2017

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 19 नवम्बर 2017 से 25 नवम्बर 2017

मार्गशीष शु.– 01 ● वि० सं०–2074 ● वर्ष 58, अंक 97, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्यसमाज नागौरी गेट का 131वाँ वार्षिक उत्सव एवं अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी का हुआ भव्य अभिनन्दन

आर्य समाज नागौरी गेट हिसार का 131 वाँ वार्षिक उत्सव अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस बार के वार्षिक उत्सव का सबसे बड़ा आकर्षण रहा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकत्री समिति के प्रधान आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी का भव्य अभिनन्दन। वार्षिक उत्सव की सबसे मुख्य गतिविधि रही समाज में व्याप्त बुराईयो के विरुद्ध विशेषकर बाल यौन शोषण के विरुद्ध की गई पद यात्रा, जिसमें नगर के हजारों आर्य जनों, शिक्षण संस्थाओं के छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। इस पद यात्रा में डॉ. पूनम सूरी विशेष रुप से सम्मिलित हुए। यात्रा का संचालन नगर के वयोवृद्ध आर्य नेता श्री हरि सिंह सैनी ने किया। नगर में यह यात्रा बहुत चर्चित रही और इसका विशेष प्रभाव भी देखने को मिला।

आर्य समाज नागौरी गेट, दयानन्द कॉलेज हिसार एवं डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के तत्त्वावधान में सीएबी सी.सै. स्कूल के प्रांगण में एक विशाल अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मान्य प्रधान जी के पद्मश्री की उपाधि से अलंकृत होने के बाद हिसार में उनके प्रथम आगमन पर उनका भव्य अभिनन्दन किया गया। दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के प्राचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी के ब्रह्मत्व में हुए यज्ञ पर आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी जी सपत्नीक मुख्य यजमान बने। इसी यज्ञ पर श्री हरि सिंह सैनी सहित डी.ए.वी. के वरिष्ठ पदाधिकारियों, प्राचार्यों एवं आर्य सभासदों ने आहुतियाँ डाल कर मुख्य यजमान की दीर्घायु और मंगलमय भविष्य की प्रार्थना की।

श्री हरि सिंह सैनी ने मान्य प्रधान जी का स्वागत करते हुए उनके नेतृत्व में आर्य समाज और डी.ए.वी. संस्थाओं की कार्यप्रणाली में आई पवित्रता, समर्पण, दक्षता और उपलब्धियों का बखान करते हुए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा अभिव्यक्त की। इसका प्रमाण देते हुए उन्होंने मंच से आर्य समाज नागौरी गेट और इसके अधीन चल रही शिक्षण संस्थाओं को पूर्णतया आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. प्रबन्धन के अधीन करने का संकल्प दोहराया। वे उस समय अत्यन्त भावुक हो गए जब उन्होंने कहा इस समाज के साथ चल रही पाँच संस्थाओं को मिला कर अब डी.ए.वी. 914 नहीं 919 संस्थाओं वाला देश का सबसे बड़ा संगठन बन गया है।

इस अवसर पर दयानन्द कॉलेज हिसार एवं अन्य डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं ने एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए हरियाणा, राजस्थान, पंजाब की सांस्कृतिक धरोहर का प्रवाभशाली मंचन किया।

आर्य रत्न डॉ पूनम सूरी ने अपने संबोधन में इस अभिनन्दन के लिए श्री हरि सिंह सैनी, आर्य समाज नागौरी गेट, डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के सभी आर्य जनों का हार्दिक धन्यवाद किया। श्री हरि सिंह सैनी को आलिंगन बद्ध करते हुए माननीय प्रधान जी ने इसे भरतमिलाप की संज्ञा देते हुए कहा हमें मिलजुल कर संगठित होकर धर्म व मानवता के लिए कार्य करना होगा जोकि वेद के संगठन सूत्र की प्रथम शिक्षा है। हमारा जीवन सूर्य का अनुसरण करने वाला बने। हमारे प्रिंसीपल, अध्यापकगण, आर्य भाई–बहनें अपने कार्यों व अपने गुणों से राष्ट्रसेवा में समर्पित रहें। मान्य प्रधान जी के हिसार आगमन पर पूरे आर्य

परिवेश में और शिक्षण संस्थाओं में एक अपूर्व जोश था। हर एक की इच्छा थी कि उनके कदम उनकी संस्था में पड़े और उनका आशीर्वाद मिले। इसी प्रसंग में माननीय प्रधान जी ने दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय का महात्मा आनन्द स्वामी सभागार का लोकार्पण किया, आई.डी.डी.ए.वी. स्कूल के महात्मा आनन्द स्वामी ब्लॉक तथा डी.ए.वी महात्मा आनन्द स्वामी स्कूल हाँसी के भवन का उद्घाटन अपने कर कमलों से किया। कुल मिलाकर सारा समारोह सभी के मन पर स्मृतियों का एक अविस्मरणीय छाप छोड़ गया।

इस आयोजन की संकल्पना में श्री हंसराज गंधार परामर्शदाता डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति और डॉ. पवन शर्मा प्राचार्य दयानन्द कॉलेज हिसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसके लिए प्रधान जी ने उन्हें विशेष सम्मान दिया।

इस अवसर पर डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति, नई दिल्ली के महासचिव श्री आर. एस. शर्मा, वरिष्ठ उपप्रधान सर्वश्री रमेश आर्य, रवीन्द्र कुमार, महेश चोपड़ा, एच.आर.गन्धार, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा के प्रधान श्री के.एल. खुराना, आर्य युवा समाज के प्रधान डॉ. डी.डी. विद्यार्थी के अतिरिक्त डी.ए.वी. एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी समारोह की शोभा बढ़ा रहे थे।

एम.पी.डी.डी.ए.वी. कालाँवाली में हुआ 21 कुण्डीय यज्ञ

माता पुन्ना देवी सी. सै. पब्लिक स्कूल कालाँवाली में प्रधानाचार्य श्री मनजीत स्तेवाल की अध्यक्षता में 21 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ में विद्यालय के चेयरमैन श्री सतीश कुमार जी सिंगला तथा स्थानीय प्रबन्धकर्त्री समिति सदस्य श्री सुरेश कुमार जी सिंगला मुख्य यजमान के रूप

में उपस्थित रहे। सभी ने पूर्ण उत्साह, श्रद्धा व विश्वास के साथ वैदिक मंत्रों का उच्चारण करते हुए यज्ञ की पावन अग्नि में आहुतियाँ डालीं। विद्यार्थियों तथा अध्यापकों द्वारा सुंदर–सुंदर भाषण प्रस्तुत किए गए।

प्रधानाचार्य श्री मनजीत स्तेवाल ने आए हुए सभी वरिष्ठ जनों का धन्यवाद करते हुए बच्चों को पूर्ण ईमानदारी तथा मेहनत के साथ जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित किया। यज्ञ के अंत में सभी को प्रसाद वितरित किया गया।

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 19 नवम्बर 2017 से 25 नवम्बर 2017

दोनों हाथों से भर-भरकर दे

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

दिवो विष्ण उत वा पृथिव्याः, महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात्।
हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैः, आप्रयच्छ दाक्षिणादोत सव्यात्।।

अथर्व 7.26.8

ऋषिः **मेधातिथिः**। देवता **विष्णुः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**विष्णो**) हे सव्रव्यापक परमात्मन्! (**दिव**) द्युलोक से (**उत वा**) और (**पृथिव्याः**) पृथिवी–लोक से [तथा] (**विष्णो**) हे विश्वान्तर्यामिन्! यज्ञ के देव! (**महः**) महनीय (**उरोः**) विस्तीर्ण (**अन्तरिक्षात्**) अन्तरिक्ष–लोक से (**बहुभिः**)वहुत– से (**वसव्यैः**) ऐश्वर्य–समूहों से (**हस्तौ**) दोनों को (**पृणस्व**) भर ले। (**दक्षिणात्**) दाहिने हाथ से (**आ प्रयच्छ**) दान दे (**उत**) और (**सव्यात्**) बाएँ से [भी] (आ [प्रयच्छ]) दान दे।

● हे विष्णु! हे सर्वव्यापक! हे विश्वान्तर्यामिन्! हे विश्व–ब्रह्माण्ड के स्वामिन! तुम अपूर्व धनाधीश हो। विश्व के द्युलोक, अन्तरिक्ष–लोक और पृथिवी–लोक में जो धन बिखरा पड़ा है, वह सब तुम्हारा ही है। अतः तुम धन–कुबेर हो। एक और तुम धनपति हो ओर हम अकिंचन हैं। अतः हम चाहते हैं कि तुम अपने कोष में से दाहिने–बाएँ दोनों हाथों से भर–भरकर हमें दान दो। तुम्हारे रचे द्यु–लोक में प्रकाश का अनुपम पारावार भरा पड़ा है। वह प्रकाश तुम हमें भी प्रदान करो। तुम्हारे रचे विशाल अन्तरिक्ष–लोक में वायु और पर्जन्य का सागर उमड़ रहा है। उसमें से हमें भी प्राण–वायु और अमृतमय वृष्टि–जल प्रदान करो। तुम्हारे रचे पृथ्वी–लोक से सुवण, रजत, ताम्र अयस, हीरे, मोती आदि ऐश्वर्यों की निधियाँ भरी हुई हैं। वे ऐश्वर्य तुम हमें भी प्रदान करो। अल्प मात्रा में नहीं, प्रचुर मात्रा में प्रदान करो, क्योंकि हम ऐश्वर्यमय जीवन जीने की ही साध लिये हुए हैं।

पर हे विश्वव्यापी देव! हम केवल इन भौतिक ऐश्वर्यों का ही पाकर सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहते। हम शरीरस्थ द्यु–लोक, अन्तरिक्ष–लोक और पृथिवी–लोक के ऐश्वर्यों को भी पाने के लिए आतुर हो रहे हैं। हमारा अन्नमय कोश ही पृथिवी–लोक है, जिसमें शरीर की त्वचा से लेकर अस्थि–पर्यन्त सब ढांचा आ जाती है। असका ऐश्वर्य है शारीरिक स्वास्थ्य और शारीरिक बल, जिसके बिना मनुष्य का जीवन–यापन,व्यान,उदान, समा, इन पांचों से तथा कर्मेन्द्रियों से मिलकर प्राणमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है प्रागण, अपानन आदि क्रियाओं का समुचित रूप से होते रहना तथा हस्त–पादादि कर्मेन्द्रियों को कार्य–क्षम बने रहना। मन और ज्ञानेन्द्रियों से मिलकर मनोमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है मन के माध्यम से ज्ञानेन्द्रियों का ज्ञान–प्राप्ति में सहायता होना तथा मन का सत्यसंकल्प करना। ज्ञानेन्द्रियों–सहित बुद्धि विज्ञानमयकोश कहलाता है। इसका ऐश्वर्य है ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान पर ऊहापोह करके निश्चयात्मक ज्ञान अर्जित करना। आनन्दमय कोश द्यु–लोक है, जहाँ हृदयपुरी में प्रतिष्ठित आत्मा के अन्दर ब्रह्म का वास है। इसका ऐश्वर्य है ब्रह्मानन्द की प्राप्ति। हे विष्णुदेव! तुम इन समस्त ऐश्वर्यों से भी भरपूर करने की कृपा करते रहो।

हे जगत्पिता! तुम निरैश्वर्य की अवस्था से पार करके हमें अधिकाधिक ऐश्वर्य प्रदान कर कृतार्थ करते रहो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

अमृत-पान

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी ने ''क्या बनना चाहते हो? पुरूष या स्त्री!'' का उदाहरण देते हुए बताया शरीर और इन्द्रियों को अपने वश में करना एक पुरुष कहलाने वाले मनुष्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है और शरीर तथा इन्द्रियाँ ईश्वरभक्ति से ही वश में हो सकती हैं। सच्चा ईश्वरभक्त उनका स्वामी होता है–उनका पति होता है, परन्तु जो ईश्वरभक्त नहीं है, वह शरीर और इन्द्रियों की पत्नी बन जाता है।

दूसरी कथा में स्वामी जी ने ''एक तेरी दरकार'' का उदाहरण देते हुए कहा उपासना करो उसकी निष्काम होकर, भक्ति करो बिना इच्छा कि फिर तुम देखोगे कि जहाँ तुम्हें परमानन्द मिलेगा, वहाँ संसार के सारे सुख और ऐश्वर्य भी मिल जाएगे क्योंकि श्रुति (वेद) में ऐसी उपासना के विषय में बड़े अधिकार पूर्वक कहा है और वेदवाणी कभी भी असत्य नहीं हो सकती।

–आगे पढ़ेंगे दो लघु कथायें

शील

● ''पुत्र! सुन, मैं तुझे एक कथा सुनाता हूँ।'' धृतराष्ट्र ने दुर्योधन से यह कहा और फिर एक कथा सुनाना आरम्भ की, जो इस प्रकार है–

युग बीत गए। प्राचीन युग में प्रह्लाद नामक एक राक्षस रहता था, परन्तु शील के कारण उसने इन्द्र के राज्य पर भी हाथ मारा और स्वयं राजा बन गया। इन्द्र दुःखी होकर बृहस्पति के पास गया और उनसे पूछा–'' अब मैं क्या करुँ? मेरा कल्याण कैसे हो?'' बृहस्पति ने उससे कहा– ''इन्द्र! तू ब्राह्मण का वेश धारण करके प्रह्लाद के पास जा। वह तुझे बताएगा कि तेरे कल्याण का कौन–सा मार्ग है।''

इन्द ब्राह्मण की वेशभूषा में सुसज्जित होकर प्रह्लाद के पास पहुँचा और कहने लगा– ''राजन्! मैं आपके पास इसीलिए आया हूँ कि मेरा कल्याण जिस भी उपाय से हो, आप मुझे उसका उपदेश करें।''

प्रह्लाद ने उसे आदर से बिठाया। आवभगत की। जब दोनों निश्चिंत होकर बैठे तब इन्द्र ने अवसर देखकर पुनः प्रश्न किया– ''राजन्! आपने इस त्रिलोकी का राज्य कैसे प्राप्त किया।''

प्रह्लाद– हे सम्मान के योग्य ब्राह्मण! सुनों, मैं कभी धर्म से इधर–उधर नहीं हुआ। कोई राजा धर्म पर स्थिर नहीं रह सकता, मैंने सच्चे ब्राह्मणों और संन्यासियों को अपना मार्गदर्शक बनाया। वे मुझे शुद्ध धर्म के मार्ग पर चलाते रहे और उसी कारण से यह राज्य मुझे प्राप्त हो गया।

देर तक इस प्रकार की बातें होती रहीं। अन्त में प्रह्लाद ने इन्द्र से कहा– हे ब्राह्मण! मैं आपसे बहुत प्रसन्न हूँ। कहिए, मैं आपकी क्या सेवा करुँ।

इन्द्र– राजन्! मैं और कुछ नहीं चाहता। मुझे केवल अपना शील दे दीजिए। प्रह्लाद ने प्रसन्नता से शील दे दिया।

जब इन्द्र शील लेकर चला गया तब प्रह्लाद को चिन्ता सताने लगी। इतने में ही प्रह्लाद के शरीर से एक तेज निकला। उसे देखकर प्रह्लाद ने पूछा– ''तू कौन है?''

उस मूर्तिमान् तेज ने उत्तर दिया– ''मैं शील हूँ।''

प्रह्लाद– तू कहाँ जाता है?

तेज– ''मैं तेरे ब्राह्मण इन्द्र के पास जाता हूँ, क्योंकि तूने मेरा त्याग कर दिया है।'' यह कहकर वह तेज अदृश्य हो गया।

उस तेज के जाते ही प्रह्लाद के मुखमण्डल पर मृत्यु–सी छा गई। कुछ समय और व्यतीत हो गया। एक और तेज प्रह्लाद के शरीर से निकला।

प्रह्लाद ने उससे पूछा– ''हे प्रह्लाद! मेरा नाम धर्म है और मैं वहाँ जाता हूँ जहाँ शील गया है''

तेज– ''हे प्रह्लाद! मेरा नाम धर्म है और मैं वहाँ जाता हूँ जहाँ शील गया है।''

प्रह्लाद– ''परन्तु मुझे यह तो बतलाते जाओ कि तुम क्यों जाते हो? मैंने तुम्हारा त्याग नहीं किया।''

तेज– '' हाँ, राजन्! यह ठीक है कि आपने मेरा त्याग नहीं किया, परन्तु मैं शील का बिछोह सहन नहीं कर सकता। मैं उसके बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता, अतः मैं वहाँ जाता हूँ, जहाँ वह गया है।''

इतने वार्तालाप के पश्चात् वह मूर्तिवान तेज दृष्टि से ओझल हो गया और प्रह्लाद के मन में अँधेरा छा गया।

परन्तु यह क्रम अभी यहीं समाप्त नहीं हुआ, प्रत्युत एक और तेज उसके मुखमण्डल से निकला, जिसने प्रह्लाद के प्रश्न करने पर कहा– '' मैं सत्य हूँ और धर्म के बिना नहीं रह सकता।'' ऐसे ही एक और तेज निकला, जिसने अपना नाम व्रत बतलाया। यहाँ तक कि क्रमशः (एक–एक करके) सारे तेज निकलते गए। अब तो शक्ति का तेज भी निकल गया। ज्यों–ज्यों ये तेज निकले जाते थे, त्यों–त्यों प्रह्लाद की दशा बिगड़ती जाती थी। उसके तेजस्वी मुखमण्डल पर झुर्रियाँ पड़ती जाती थीं। उसके राज्य के प्रदेश एक के पश्चात् दूसरा उसके हाथ से निकलते जाते थे।

अन्ततः समस्त तेजों के पश्चात् एक अत्यन्त प्रकाशमान् तेज उसके शरीर से निकला।

प्रह्लाद ने हाथ–पाँव मारे। माथे पर हाथ रखा और निर्बल ध्वनि से कहा– ''हे सुन्दरी! तू कहाँ जाती है?''

सुन्दरी– '' तुम मुझे अब सुन्दरी मत कहो। मैं अब तुम्हारे पास नहीं ठहर सकती। मेरा नाम श्री=(लक्ष्मी) है।''

प्रह्लाद– ''हे लक्ष्मी! आप यह क्या कर रही हैं। ऐसा अन्धेर क्यों करती हो। तुम सब बारी–बारी कहाँ जाते हो? वह कौन–सा मनुष्य है, जो तुम सबको खींच रहा है।''

लक्ष्मी– '' राजन्! अब चिन्ता क्यों करते हो। तुमने अहंकार में आकर अपना शील ब्राह्मण को दे दिया। मैं तुमसे उसी समय पृथक हो जाती, परन्तु तुम्हारे लिए इतने दिनों ठहरी रही। भला, शील के बिना हम लोग यहाँ कैसे रह सकते हैं? राजन्! संसार में मैं यह भी देखती हूँ कि शीलरहित मनुष्य भी मुझे प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु स्मरण रखो, वे मेरा भोग नहीं कर सकते। वे केवल मेरे रखवाले और चौकीदार होते हैं। वे धन के साँप होते हैं। इससे बढ़कर उनका कोई अधिकार नहीं होता। राजन्! सुनो, मुख ऊपर करो और देखो कि मैं जा रही हूँ।'' लक्ष्मी ने यह कहा और झटपट अदृश्य हो गई। अब लोग प्रह्लाद की दयनीय अवस्था पर आँसू बहाते हैं। उसका राजपाट छीना जा चुका है। उसका वंश नष्ट हो चुका है। उसका मान–सम्मान समाप्त हो चुका है और अब द्वार–द्वार पर भीख माँगता दिखाई देता है।

यह एक काल्पनिक कथा है, जो धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को सुनाई। शील क्या है, जिसके आने से सब–कुछ आ जाता और जिसके चले जाने से सब–कुछ चला जाता है। शील–सदाचार, नैतिकता, सत्य, धर्म–परायणता का ही दूसरा नाम है। जिसके अन्दर ये गुण होंगे, वह सांसारिक प्रत्येक वस्तु को प्राप्त कर लेता है। जिस जाति में ये गुण नहीं, वह जाति मुर्दा है, मरी हुई है। उसकी दशा शीलरहित प्रह्लाद की–सी है। हे मेरी जाति! देख और ध्यानपूर्वक देख कि तेरी अवस्था शीलरहित प्रह्लाद की–सी है या नहीं। यदि ऐसी ही है तो आवश्यकता है कि तू अपने अन्दर शील का संचार कर। तेरे कल्याण का यही मार्ग है।

किराए की गाड़ी

किराए की गाड़ी एक दुर्गम जंगल से जा रही है। उसमें एक सवार बैठा है। गाड़ी में से बार–बार एक आवाज़ आती है– ''किराया दो, किराया दो।'' सवार जल्दी–जल्दी किराए की माँग से अत्यन्त दुःखी हो गया हैं। गाड़ी दो पग चलती है तो पुनः किराया देने का आदेश होता है। मार्ग बड़ा बीहड़ है। बिना गाड़ी के लक्ष्य–स्थान पर पहुँचना कठिन ही नहीं, प्रत्युत असम्भव–सा है, परन्तु सवार अब तो अत्यन्त दुःखी हो चुका है। गाड़ीवान सवार का पहले ही बहुत कुछ खर्च करा चुका है। कभी गाड़ी पर रंग–रोगन करा दो। घोड़ों के लिए नाना प्रकार का उत्तम घास, बढ़िया दाना और ऐसी ही अन्य आवश्यक वस्तुएँ इकट्ठी कर दो। घोड़ों के लिए बढ़िया झूल, गाड़ी की सजावट के लिए अन्य सारा सामान तथा सारा साज़ आदि ले–दो।

इस क्रय–विक्रय में सवार को लक्ष्य–स्थान पर ठहरना पड़ता था और समय नष्ट हो जाता था। इतनी बातों के पश्चात् भी किराए की माँग सदा होती रहती थी। इधर उसे लक्ष्य–स्थान पर शीघ्र पहुँचना था। उधर गाड़ीवान तंग कर रहा था कि गाड़ी का पहला रोगन ,खराब हो चुका है, अब दोबारा करा लिया जाए। कहने का तात्पर्य यह है कि इसी प्रकार सवार को तंग किया जा रहा है और उसे लक्ष्य–स्थान पर पहुँचने में व्यर्थ में देरी लगाई जा रही है।

पाठक! यह सवार कौन है? ये सवार आप ही हैं। आश्चर्य में न पड़ें। सचमुच आप ही सवार हैं। आप एक किराए की गाड़ी पर सवार हैं, जिसका स्वामी सदा किराया माँगता रहता है। यदि थोड़ी देर के लिए हवा–प्राणवायु न मिले तो अन्दर से आवाज़ आती है– निकलो बाहर।

यदि चौबीस घण्टे तक पानी न मिले तो आवाज़ आती है– निकलो बाहर। यदि चार–पाँच दिन भोजन न मिले तो आवाज़ आती है– निकलो बाहर। ऐसी किराए की गाड़ी में बैठकर जिसका स्वामी एक–एक मिनट में किराया माँगता है, आप उस गाड़ी को अपनी कैसे कह सकते हैं? ये किराए की गाड़ी को अपनी कैसे कह सकते हैं? ये किराए की गाड़ी जिसे आप अपना समझ बैठे हैं, आपका शरीर है। लक्ष्य स्थान= प्रभु–प्राप्ति तक पहुँचने के लिए गाड़ी की आवश्यकता है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि आप इसको अपनी ही गाड़ी समझ लें और इसकी सजावट में ही समय नष्ट कर दें। इस शरीररूपी गाड़ी को किराया देना तो आवश्यक है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि आप इस किराए की गाड़ी को अपना समझ और मानकर बजाए लक्ष्य स्थान पर पहुँचने के इस गाड़ी के रख–रखाव, सजावट और भूषित करने में ही समस्त आयु नष्ट कर दें और लक्ष्य की ओर एक पग भी न चलें। गाड़ी के घोड़ों को खिलाने–पिलाने में अधिक समय नष्ट करना मूर्खता है।

हे किराए की गाड़ी पर सवार लोगों! इस सूक्ष्म बात को समझो और देखो कि क्या तुम्हारा यह कर्त्तव्य है कि तुम गाड़ी की सजावट में सारा समय नष्ट कर दो अथवा तुम्हारा यह कर्त्तव्य है कि इसे साधारण किराया देकर शीघ्रता के साथ लक्ष्य–स्थान की ओर चलने के लिए हाँको और जितनी शीघ्र हो सके, इसे वहाँ ले–चलो।

क्रमशः

सुख चाहते हो तो उसकी मानो।

● रामनिवास 'गुणग्राहक'

आर्य बन्धुओ! शीर्षक थोड़ा अटपटा–सा लग रहा होगा। भला संसार में सुख कौन नहीं चाहता। सब प्राणी सुख ही तो चाहते हैं। मनुष्यों की बात करें तो चाहे कोई मूर्ख हो या विद्वान धनी हो या निर्धन बालक हो या वृद्ध, स्त्री हो या पुरुष–सब सुख पाने की ही इच्छा करते हैं। इसलिए प्रश्न होता है किसकी मानें? कौन है ऐसा, जिसकी मानने से सुख मिलता है? अगर किसी की मानने से ही सुख मिलता हो तो बताओ न, हम किसकी मानें? सुख चीज ही ऐसी है कि कहीं से मिलने की सम्भावना दिखे तो मनुष्य आकाश–पाताल एक करने को भी तैयार हो जाता है। घर–परिवार छोड़कर दूर देश–विदेश में जाकर पैसा कमाने के पीछे सुख की ही तो भावना काम करती है। कई बार अपने कहलाने वालों से झगड़ा करने के पीछे दुःख पाने की इच्छा तो किसी की भी नहीं होती। हम अपने रक्त सम्बन्ध रखने वाले माता–पिता व भाई बहिनों से लड़–झगड़ कर अज्ञान कुलशील वालों के साथ अपनेपन का नाता जोड़ लेते है क्यों? सुख के लिए! एक किसान तपती धूप और ठण्डी रातों में खेत में काम करता है तो सुख के लिए। विचार करने पर पता चलता है कि एक चोर भी अगर चोरी करता है तो जेल जाकर दुःख भोगने के लिए नहीं, बल्कि उसके मस्तिष्क से चतुराई व सावधानीपूर्वक चोरी करके, चोरी से प्राप्त माल को लेकर उससे सुख पाने की सटीक योजना होती है, उसी योजना के अनुसार सुख के लिए ही वह चोरी करता है।

इन सब क्रियाकलापों पर तनिक विचार करके देखें तो एक बात सहजता से समझी जा सकती है कि सुख पाने की भावना तो सबकी सदा रहती है, लेकिन सुख पाने के साधन और उपाय सबके एक जैसे नहीं रहते। संसार के सब स्त्री–पुरुष जो सुख चाहते हैं वे एक बात समझ लें कि जब तक हम अपनी–अपनी योजनाएँ बनाकर सुख पाने के प्रयास करते रहेंगे, तब तक सुख की प्राप्ति सुनिश्चित नहीं हो सकती। क्योंकि यह संसार मेरे, आपके या किसी भी व्यक्ति विशेष के चलाए नहीं चल रहा। इस संसार का चलाने वाला परम–पिता परमात्मा है। न केवल धरती पर बल्कि सारे ब्रह्माण्ड में उसी की व्यवस्था चलती है। संध्या के मंत्रों में हम नित्य पाठ करते हैं– 'विश्वस्य मिषतोवशी' वह परमात्मा सारे विश्व ब्रह्माण्ड को बिना विशेष प्रयास के, स्वाभाविक रूप से वश में किए हुए है। अणु–परमाणु से लेकर बड़े–2 ग्रह–उपग्रह नक्षत्र आदि की हर हलचल प्रभु के पूर्णतः नियंत्रण में है। ब्रह्माण्ड का प्रत्येक प्राणी इसी प्रत्येक गतिविधि, सब कुछ उसी की व्यवस्था से बँधी हुई है। उसकी व्यवस्था का उल्लघंन करके बनाई गई सुख पाने की योजना इस जन्म तो क्या जन्मान्तरों तक भी सफल नहीं हो सकती। हाँ आप उसकी आज्ञा का उल्लघंन करके मनमाने उल्टे काम तो कर सकते हो, लेकिन उनका मनमाना फल पाना चाहो, तो यह सम्भव नहीं। ध्यान रखो हमारे हाथ कर्म करना है, फल देना परमात्मा के हाथ है।

अन्धविश्वास और पाखण्ड के सहारे लोगों को भयभीत करने वाले ज्योतिषियों को छोड़कर धर्म–कर्म और ईश्वर में विश्वास करने वाले सभी मानते है कि कर्मफल की व्यवस्था ईश्वर के अधीन है। वह ईश्वर बड़ा दयालु है, उसने अपनी कर्मफल व्यवस्था का आवश्यक ज्ञान वेद के द्वारा हमें दे रखा है। वेद में दी हुई ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था को जानकर कि परमात्मा ने सुख पाने की विधि क्या बताई है। उस विधि से चलकर सुख पाने के हमारे प्रयास तो सुखदायक होंगे उसके विपरीत हम कुछ भी करते रहें, उसका परिणाम सुखद नहीं हो सकता। परमात्मा ने जो कर्मफल व्यवस्था बनाई है, वह बहुत सीधी, सरल और न्यायपूर्ण है। ईश्वर का आदेश है– 'दुष्कृते या सुगं भूत' (ऋ. 7.104.7) दुष्कर्म करने वाले की जीवन–यात्रा सुगम, सरल नहीं होती। 'अघमस्तु अघं कृते' (अ. 10.1.5) अर्थात् बुरे का परिणाम बुरा ही होता है। अच्छे–बुरे की भी बड़ी सीधी–सरल पहचान है। जो हमें अपने लिए अच्छा लगे, वह सबके लिए अच्छा और जो हमें अपने लिए बुरा लगे तो व सबके लिए बुरा। ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था की ओर सीधे –सरल शब्दों में कहें तो हमें सदा संसार में वही मिलता है जो हमने कभी दूसरों को दिया था। इसे यूँ भी समझ सकते हैं कि हम अपने लिए जो चाहते हैं वही दूसरों को दें। यही ईश्वर का आदेश है।

हम एक बात अपने मन और मस्तिष्क की गहराई में बसा लें कि हमें जो भी सुख–दुःख मिल रहा है या मिलेगा, वह हमारे कर्मों का फल ही होगा। 'कृतं हि फलति सर्वत्र न अकृतं भुज्यते कदाचित्'। अर्थात् कर्म ही सदा फल देता है, बिना कर्म किए किसी को कुछ नहीं मिलता। दूसरों को सुख या दुःख देकर हम कर्म रूपी जो बीज डालते हैं, वही भाग्य बनकर सुख या दुख के रूप में हमें मिलता है। आज हमारी स्वार्थ में फँसी हुई छोटी–बुद्धि यह नहीं समझ पाती कि हम अपने द्वारा किए किसी कर्म का फल सीधे अपनी व्यवस्था, अपनी शक्ति व सामर्थ्य से नहीं पा सकते। हमारे कर्म ही हमारे अधीन हैं, उनके फल पूरी तरह से ईश्वर के अधीन हैं। गीता में श्री कृष्ण स्पष्ट घोषणा करते हैं– 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।' कर्म ही हमारे अधिकार में हैं, फल कभी हमारे अधिकार में नहीं हैं। कर्मफल ग्रह–नक्षत्रों, रेखा–राशियों के अधीन भी नहीं हैं, कर्मफल तो पूर्णरूप से परमात्मा के अधीन है। वह परमात्मापूर्ण न्यायकारी है, कभी किसी के साथ नाम मात्र भी पक्षपात नहीं करता। विचारशील, ईश्वर विश्वासी मनुष्य जानता है कि मैं किसी को सुख नहीं दे रहा, बल्कि अपने लिए सुख कमा रहा हूँ। इसी प्रकार किसी को दुःख देने के समय वह इसलिए भयभीत हो उठता है कि मैं किसी को दुःख नहीं दे रहा, बल्कि अपने लिए दुःख कमा रहा हूँ। यह सोच जिसकी जब भी बन जाएगी, वह तभी से दूसरों को दुःख देने से डरेगा तथा सुख देने में अति उत्साह को प्राप्त होगा। प्रभु अपनी अटल न्याय पूर्ण व्यवस्था से हम सबको यही सन्देश, आदेश व उपदेश दे रहे हैं। विचारवान सज्जनो! सुनो, इसे समझो और इसे स्वीकारो!!

आर्य समाज श्रीगंगानगर, राज.
मो. 7597894991

स्तुति–प्रार्थना–उपासना मन्त्र – एक विवेचन

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

ईश्वर स्तुति–प्रार्थना–उपासना के मन्त्रों का ऋषि कृत अर्थ संयोजन सहित विवरण 'ऋषि–समर्पण' में संकलित है। पृष्ठभूमि में इस चिन्तन पर गहराई तक, दीर्घ समय तक संलग्न रहने का स्वाभाविक परिणाम यह निकला ही था कि उन्हें लेख बद्ध किया जाए और जन सामान्य को भी सुलभ करा दिया जाए। आठों मंत्रों से सभी आर्यजन सुपरिचित ही हैं

ये मंत्र वेदों के 20416 मंत्रों में से चयनित किए गए हैं जो ऋषिवर दयानन्द के अगाध ज्ञान समुद्र की तलस्पर्शी पहुँच का निचोड़ हैं। उनकी इस अप्रतिम सूझबूझ, अतुलनीय योग्यता का परिचायक है जिसकी कल्पना किसी भी संन्यासी या विद्वान में नहीं की जा सकती। मंत्र तो वेद के हैं पर संयोजन वह भी कुल 8 मंत्रो में करना महर्षि का कार्य है। यह क्या कम दुस्साध्य कार्य नहीं था?

प्रथम मंत्र में 'देव' और 'सविता' सम्बोधक परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि वह हमारे सम्पूर्ण दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुःखों को दूर करें। महर्षि 'देव' शब्द का अर्थ सब सूर्यादि जगत् का, विद्या का प्रकाशक और सब आनन्द का देने वाला करते हैं। महर्षि ने निरुक्त के अर्थ के साथ 'सूर्यादि जगत् का उत्पति कर्ता भी जोड़ दिया। अर्थ को व्यापक रुप देने में यह योगदान उनका अपना है। महर्षि 'सविता' शब्द का अर्थ सर्वजगदुत्पादक सर्वशक्तिमान करते हैं। ऐसे देव और सविता के अतिरिक्त दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख मिटाने का सामर्थ्य किसी और में नहीं हो सकता। न ही सृष्टि रचना का सामर्थ्य, हिरण्यागर्भ परमात्मा के अतिरिक्त किसी और में हो सकता है।

केवल प्रार्थना से ही दुर्गुण, दुर्व्यमन और दुःख निवृत्ति की प्रार्थना कोई अर्थ नहीं रखती। ईश्वर प्रार्थना तभी स्वीकार करते हैं जब पूर्ण पुरुषार्थ के बाद भी सद्कार्यों में सफलता न मिले, तब प्रभु से प्रार्थना करने पर वह सहायता करता है। दुर्गुण व दुर्व्यसन, छोड़ने उनके लिये सम्भव नहीं है जो कहते हैं–छूटे से नहीं छूटती मुंह को लगी हुई। केवल और केवल दृढ़ इच्छा शक्ति Strong Will Power से इनको दूर किया जा सकता है।

ये तीन उदाहरणों से अपनी बात स्पष्ट करता हूँ। बाउजी की आयु 82–83 वर्ष की होगी। अनेक वर्षों से शौच जाने से पहले एक बीड़ी पीते थे फिर दिन में कभी नहीं। एक दिन मां से बीड़ी का बण्डल लाने को कह दिया। मां ने उनसे क्या कहा, अब स्मरण नहीं पर, बाउजी ने घोषणा कर दी–आज से, अभी से बीड़ी नही पिऊँगा। बीड़ी फिर घर में आई ही नहीं।

संजीवनी अस्पताल गुरुग्राम (गुड़गांव) के प्रख्यात चिकित्सक डॉ. सुबोध सहाय मेरे उदररोग की चिकित्सा कर रहे थे। कहा वजन अधिक है, कम करो। शक्कर व चावल का परहेज बताया। चावल से तो ज्यादा आपत्ति नहीं थी पर 'मीठा' तो मेरे भोजन का अनिवार्य अंश था। दिन रात जब मिष्टान्न मिल जावे तो ही आनन्द। धर्मपत्नी जी इस कमजोरी को भलीभांति जानती थी। तभी सपरिवार सोमनाथ भ्रमण करते हुए एक गली दिखी, जिसमें मिठाइयों की दुकानें सजी हुई थीं, सब लोग भोजन के लिए जा रहे थे, मैंने धीरे से पत्नी से कहा– शुगर लेवल कम हो गया है, जरा इंतजाम करके आता हूं। दामाद श्री देवेन्द्र ने सुन लिया। पत्नी मनीषा से पूछा– क्या पापा डायबिटिक हो गए हैं? सुपुत्री ने चौंक कर कहा– नहीं तो। पापा मां से कह रहे थे कि शुगर लेवल ठीक करके आता हूं। बिटिया ने मां से पूछा। मां ने कहा– कुछ नहीं। दो तीन दिन से मीठा नहीं मिला है इसलिए मिठाई लेने चले गए होंगे। सबके चेहरे पर आश्चर्य मिश्रित मुस्कान बिखर गई।

उदर रोग चरम सीमा पर था। डॉ सुबोध सहाय जितने परीक्षण समझते थे, करा चुके थे। प्रत्येक माह ग्वालियर के गुडगांव जाना पड़ता था। स्वयं ने अनुभव किया कि डाक्टर साहब के परामर्श की अनदेखी अब और नहीं की जा सकती। 94 से घटा 75 किलो वजन चाहते थे। दवाईयां तो यथावत् चलती रहीं पर मैंने मन ही मन निश्चय कर लिया कि शक्कर नहीं खाऊंगा परिणाम यह निकला कि प्रतिमाह दो किलो की दर से वजन कम होना शुरू हुआ, जो आठ माह में 16 किलो घटकर 78 किलो रह गया। उदर रोग के साथ, छह–सात महीने बाद न्यूरो प्राब्लम हो गई। फोर्टिस, गुड़गाव के न्यूरोफीजिएशन डॉ. प्रवीण गुप्ता ने न्यूरो की दवाईयों के साथ डॉ. सुबोध सहाय की दवाईयां भी यथावत् रखी रहने दीं। वजन कम होना रूकता न देख, ग्वालियर के डाक्टर संतोष त्रिपाठी का इलाज चालू किया। डॉ. त्रिपाठी ने डॉ. प्रवीण गुप्ता की दवाईयां चालू रखकर सब दवाईयां जो उदररोग से संबन्धित थी, बन्द कर दी। परहेज से पूर्ण मुक्ति दे दी। मिष्टान्न ने तत्काल सम्मानित स्थान प्राप्त कर लिया।

मुंशीराम जी ने मित्रों के साथ शामिल भोजन करते हुए मीट का कटोरा दीवार पर फैंक कर मारा। झन्न की आवाज हुई, मीट सब जगह फैल गया। मित्रों ने पूछा– क्या हुआ? उत्तर दिया कि मैं अब मीट नहीं खाऊंगा। मित्रों ने कहा– यह बात जरा सहजता ही से कह देते। मुंशीराम जी ने कहा– नहीं। कटोरा तो दीवार पर फैंक कर इसलिये मारा कि मैं तो मीट नहीं खाऊंगा लेकिन आप लोग भी मेरे निश्चय को जान लीजिए। जीवन पर्यन्त इधर मुड़कर भी नहीं देखा। आप इस महापुरुष को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के नाम से जानते हैं।

यह तो हुई दुर्गुण और दुर्व्यसन दूर करने वाले के सामर्थ्य की चर्चा और दूर करने के उपाय। दुःख दूर करने का अपूर्व सामर्थ्य केवल सर्वशक्तिमान् परमात्मा में ही हो सकता है, अन्य में संभव ही नहीं है। दुःख दूर करने का तरीका आसान है और बिल्कुल निराला। अभावग्रस्त पीड़ा से ग्रसित वीर शिरोमणि राणा प्रताप के समक्ष, किसकी प्रेरणा से, भामाशाह समस्त धन–दौलत ले कर उपस्थित हो गया था? महाराणा ने भामाशाह से आर्थिक सहायता का कोई प्रस्ताव भी नहीं रखा था। हुआ न यह दैवी प्रेरणा से। निराकार, सर्वव्यापक परमेश्वर का, सहायता करने का यही तरीका है।

दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुःखों को दूर करने की प्रार्थना के साथ यह भी प्रार्थना की गई है कि जितने भी कल्याणकारी गुण, कर्म स्वभाव वाले पदार्थ है, उन्हें हमें प्राप्त कराईये।

प्रारम्भ ही इस मनोकामना शर्त के लिये हुआ है। प्रार्थना किससे की जा रही है? प्रार्थना की पूर्ति का, जिससे सामर्थ्य होगा उसी से प्रार्थना की जानी चाहिए। परमात्मा के सामर्थ्य का वर्णन करने के लिये ही मंत्र क्रमांक 2,4 व 5 का चयन किया गया है जो निम्न प्रकार से है–

हिरण्यगर्भ सम्बोधन से अभिषिक्त परमात्मा ही करोड़ों–अरबों से भी अधिक संख्या में, अत्यन्त प्रदीप्त, प्रभावान नक्षत्र मण्डल का जनक उत्पत्तिकर्ता है। वह केवल रचना ही नहीं करता वरन् इन हजारों टन भार वाले आकाशीय पिण्डों को भारहीन अन्तरिक्ष में जिसका निर्माता भी वही है, गुरुत्वाकर्षण शान्ति से बांध कर एक दूसरे से टकराने से बचा कर, उसी तरह भ्रमण कराता है जिस तरह वायुयान आकाश में उड़ते हैं। प्रत्येक वायुयान भिन्न ऊंचाई पर, निर्धारित गति से, निर्धारित पथ पर यात्रा पूरी करता है। यह व्यवस्था एयर ट्रैफिक कन्ट्रोल से होती है। वही हिरण्यगर्भ परमेश्वर इस दृढ़ पृथिवी और उग्र द्यूलोक का आधार है। ट्रैफिक कन्ट्रोलर भी है। ईश्वर की व्यवस्था शाश्वत–ऋत नियमों से यथावत् संचालित है। कोई व्यतिरेक कभी नहीं हुआ।

नक्षत्र मण्डल के विषय में थोड़ा और देखिए–

केवल इस सौरमण्डल के मध्य में स्थित सूर्य और भूमण्डल–पृथिवी से 13 लाख गुना बड़ा है, वजन 3 लाख 33 हजार गुना अधिक और 14 करोड़ 96 लाख किलो मीटर दूरी पर है। सूर्य के प्रकाश की गति 3 लाख किलोमीटर प्रति सैकन्ड है। सूर्य के प्रकाश को पृथिवी पर पहुंचने में 8 मिनट 16 सैकण्ड लगते हैं। सूर्यताप का केवल मात्र दो अरब वां अंश ही इस पृथिवी को मिलता है। इसी प्रकाशीय ऊर्जा से 'प्रकाश संश्लेषण' नाम जैव रासायनिक प्रक्रिया होती है जो पृथिवी पर जीवन का आधार है। यह ऊर्जा पृथिवी के जलवायु और मौसम को प्रभावित करती है। यहीं पर यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि विज्ञान सूर्य की उत्पत्ति 4.6 बिलियन यानी 4 अरब 60 करोड़ वर्ष पूर्व मानता है और ऋग्वेद के अनुसार परमात्मा सृष्टि रचना एक कला यानी 4 करोड़ 32 वर्ष के लिये करता है, इसके पश्चात् यह सृष्टि कारण तत्व–प्रलय में विलीन हो जाती है और नई सृष्टि की रचना करता है। इस सृष्टि रचना को 1 अरब 96 करोड़ वर्ष ही हुए। सृष्टि लगभग 2 अरब वर्ष और चलेगी। ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 190 मंत्र 3 देखिए–

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत।
दिवञ्च पृथिवीं चान्तिरिक्षमथो स्वः।

खगोलीय पिण्डों की रचना, सृष्टि रचना का एक अंश है। परम पिता परमात्मा प्राणधारी चेतन जीवों, अत्यंत विशालकाय हाथियों से लेकर (डायनासोर प्राणी समाप्त हो चुके हैं) समस्त पशु–पक्षी , चींटों–भुनगों तक की रचना करता है। पक्षियों में गगनचुम्बी उड़ान भरने की क्षमता प्रदान की है। वही परमात्मा अप्राणधारी जड़, जगत विशालकाय समुद्र, नदी–नाले, जलप्रपात, पृक्षों पौधों लताओं (अनेक विद्वान वृक्षों आदि को चेतन प्राणी मानते हैं) आदि की रचना करता है। ऋत्–शाश्वत नियमों से इनका संचालन करता है, युगान्त, में कल्पान्त में कारण तत्व में विलय भी करता है।

परमेश्वर की यह सृष्टि अनुपम अतुलनीय सौन्दर्य से भरी हुई है। सम्भवतः यह आर्य जगत के शिरोमणि भजनोपदेशक जो स्वयं वेदानुकूल गीत–रचना करने में बेजोड़ थे, की रचना के बचपन में सुने हुए अंश है, जो कृति पटल पर आ रहे हैं–

पत्ते–पत्ते की कतर न्यारी,
तेरे हाथ कतरनी कहीं नहीं।
तेरा खुला भण्डारा कहीं नहीं,
भर दे जो जड़–जंगल आकाश में सागर कहीं नहीं।

प्रत्येक पुष्प की संरचना गठन, रंग संयोजन सभी कुछ अलग–अलग है। किन्हीं फूलों में भीनी थोड़ी तेज और बहुत तेज गंध है और कई गंधहीन, फिर भी सौन्दर्य भरपूर है। इसको दृष्टिगत रखते हुए, अनुभव करते हुए अंग्रेजी भाषा के विश्वप्रसिद्ध कवि विलियम वड्सवर्थ की सुप्रसिद्ध स्तुति–

शेष पृष्ठ 07 पर

है अन्धेरी रात, पर दीपक जलाना कब मना है

● श्री गजानन्द आर्य

"जिस देश को रोग हुआ है, उसकी औषधि तुम्हारे पास नहीं"

उपर्युक्त वाक्य निश्चय ही किसी स्वाभिमानी चिकित्सक के ही हो सकते हैं जो किसी अन्य चिकित्सक को चुनौतीपूर्वक व्यक्त कर सकता है। ऐसा स्वाभिमानी चिकित्सक 19वीं शताब्दी का क्रान्तिकारी स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात है। उन्हें उस समय की देश की अस्वस्थ व्यवस्था सहन नहीं थी। बहुत बड़ा काम था। विशाल भारत के कोने–कोने का भ्रमण करके पता लगाने का भरसक प्रयत्न किया। कुछ समुदाय अपने–अपने तरीकों से लगे हुए थे। उनकी गहराई में जाकर पाया कि उनका तत्कालीन निदान भी सही नहीं है। तब उनको अपने अमर चिकित्सा ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में उपर्युक्त वाक्य लिखना पड़ा। अपने पुरुषार्थ को प्रभावी और चिरस्थायी बनाने के लिए उस चिकित्सक ने अच्छी औषधि और अच्छे चिकित्सक व सहयोगी तैयार करने के लिए वि. सं. 1931 में बम्बई में एक संस्था का निर्माण किया जिसका नाम रखा–"आर्यसमाज"।

बम्बई में आर्यसमाज प्रारम्भ करके अन्य नगरों में शाखाएँ खोलने के लिए निकल पड़े। पूना में दिये गये उनके प्रवचन की ये पंक्तियाँ एक रोगी के लिए बहुत सांत्वनाप्रद हैं–"यदि मुझसे कोई पूछे कि इस पागलपन का कोई उपाय भी है या नहीं? तो मेरा उत्तर यह है कि यद्यपि रोग बहुत बढ़ा हुआ है। तथापि इसका उपाय हो सकता है। यदि परमात्मा की कृपा हुई तो रोग असाध्य नहीं है।"

सं. 1931 में दिए गए इस आश्वासन के साथ उस चिकित्सक ने आर्यसमाज के लिए मार्गदर्शन के वास्ते साहित्य निर्माण कार्य चालू रखा। सत्यार्थप्रकाश जैसा ग्रन्थ जिसमें मानवसमाज और देश के आध्यात्मिक रोगों की पहचान, कारण और निदान प्रस्तुत है, उस ऋषि की अमर कृति है। रोग–उपचार और चिकित्सक की योग्यता के लिए सत्यार्थप्रकाश के अलावा संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला और पञ्चमहायज्ञविधि पुस्तकें आर्यसमाज की वैचारिकभित्ति को सुदृढ़ रखने में सक्षम है। सिद्धान्त के अटल ऋषि ने व्यवस्था सम्बन्धी नियमों–उपनियमों में अपना कोई आग्रह न रखकर आर्यसमाज के सदस्यों के द्वारा ही निर्णय कराकर सं.1934 में आर्यसमाज लाहौर की स्थापना के साथ उन नियमों को अन्तिम रूप दिया। आर्यसमाज संस्था ने देश के रोग निवारण का दायित्व अपने ऊपर लेकर स्वामी जी को अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिये अवसर दे दिया था। निश्चय ही यह वैद्य आर्यसमाज कारगर था। समय ने पलटा खाया। देश स्वाधीन हुआ।

स्वाधीनता संग्राम में आर्यसमाज का बलिदान और योगदान बढ़–चढ़ कर हुआ। शासन की बागडोर देशवासियों के हाथ में आई। आर्यसमाजी लोग अपनी–अपनी रुचि के राजनैतिक क्षेत्र में फिट होने लगे। पर यह क्या? आर्यसमाज का वर्चस्व एक साधारण संस्था में सिमट जाने लगा। जो राजनेता आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर देश सेवा व त्याग तपस्या की प्रेरणा लिया करते थे, वही नेता आर्यसमाज के निमन्त्रण पर भी अपने में संकोच करने लगे। आर्यसमाजी लोग भाषणों व आशीर्वचनों के लिए राजनेताओं की वाणी के लिए तरसने लगे। वर्तमान का आर्यसमाज अपने पूर्वजों के गौरवमय इतिहास को जनता के कानों में डाल–डालकर अपना अस्तित्व बनाए रखने की चिन्ता में है। उसी इतिहास के कुछ शब्दों को कोई राजनेता सुना देता है तब आर्यसमाजजी गद्गद हो जाते हैं। आर्यसमाजों के सत्संगों में बहुत कम व्यक्ति बैठे मिलते हैं। कहीं–कहीं विद्यार्थी बैठे मिलते हैं तो अधिकतर ऐसे कि जिनको स्कूल की ओर से जाने का दायित्व दिया गया है। गुरुकुलों की उपलब्धि का लाभ देश अथवा समाज के किस क्षेत्र में पहुँचता है, दिखाई नहीं पड़ता। आर्यवीर दल अथवा आर्यकुमार सभा अब कागजों में अधिक परन्तु जमीन पर अल्प है। आर्यसमाजी परिवारों के बच्चों को महर्षि की जीवनी तक की जानकारी नहीं है। इस प्रकार की कमजोरियों का भी रोना रोया जाता है तब एक उत्तर बड़ा सरल हो गया है कि अब आर्यसमाज की आवश्यकता ही क्या रह गयी है। आवश्यकता है आर्यसमाज को अपनी स्थिति पर विचार करने की।

ऋषि का वह वाक्य–

"यद्यपि रोग बहुत बढ़ा हुआ है तथापि इसका उपाय हो सकता है यदि परमात्मा की कृपा हुई तो रोग असाध्य नहीं है" हमारे कर्त्तव्य की याद दिलाता है। हमको जो उपकार करना था उससे हम विमुख क्यों हो गए?

आर्यसमाजियों को बात कटु लगेगी, किन्तु सच्चाई है कि आर्यसमाज के अधिकांश प्रचारकों, पण्डितों, विद्वानों, अधिकारियों और भजनोपदेशकों की वाणी में वह प्रभाव नहीं है जो 50 वर्ष पूर्व था। उस समय की वाणी संस्कारित थी, आर्यसमाजी जो बोलता था, वह उसके हृदय के उद्गार होते थे। मन, वचन, कर्म की भाषा में अन्तर नहीं था। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल का आरम्भ अपने दो पुत्रों को प्रविष्ट कराकर किया। महात्मा हंसराज ने अपने भाई द्वारा प्रदत्त मात्र अपने खर्च की राशि लेकर कॉलेज का शिक्षण और व्यवस्था सम्भाली। पं. लेखराम मृत्युशय्या पर पड़े बेटे की परवाह न कर शुद्धि के कार्य में चले गए। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी ने आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। इस प्रकार के तपस्वियों की बातों का प्रभाव ही था कि जिस कार्य को हाथों में लेते उसी में सफलता मिलती। पर आज वैसी बातों का कोई प्रभाव नहीं। आज का उपदेशक जो बोलता है, वह अपनी सामान्य विद्वत्ता और वाक् पटुता के बल पर बोलता है।

उसे अपने भाषण की उपयोगिता इसी में समझनी है कि उपस्थिति कितनी थी, तालियाँ कितनी बार बजीं। गाँवों में भजनोपदेशकों को सुनने में पहले की भाँति जमाव नहीं होता, क्योंकि उनके उपदेश में आकर्षण नहीं रहा। एक घटना याद आ गयी। कलकत्ता में एक पौराणिक सन्त पधारे उनके प्रवचन की व्यवस्था और घोषणा बहुत बड़े स्तर पर की गई। लाखों की संख्या में लोग सुनने पहुँचे। भीड़–भाड़ को देखकर एक आर्य बन्धु ने मुझे कहा कि देखिए भाईजी! इतनी बड़ी भीड़ केवल सस्ती मुक्ति पाने के लोभ में है वरना आर्यसमाज के स्वर्ण जैसे सिद्धान्तों के उपदेशों में इतनी उपस्थिति होनी चाहिए। मैंने कहा बन्धु! मुक्ति के लोभ की बात अपनी कमज़ोरी व झेंप छिपाने के लिए तो ठीक है, सब जगह वह बात युक्तिसंगत नहीं लगती। यह ठीक है कि हमारे सिद्धान्त स्वर्ण जैसे हैं, किन्तु स्वर्ण मनुष्य के लिए तभी लाभप्रद बन सकता है जब उस स्वर्ण को ठीक से संस्कारित करके स्वर्ण भस्म जैसा आरोग्यप्रद औषध बनाकर उपचार में दिया जाए। वरना स्वर्ण का सा वह ढेला आलमारियों में बन्द पड़ा रहने जैसा है। अपने स्वर्ण सिद्धान्तों की यही दशा है। आर्यसमाज जैसे सुन्दर सिद्धान्तों को जीवन में अपनाकर प्रचार–प्रसार के लिए तप त्याग की भट्ठी में से निकालकर जिन्होंने जनता जनार्दन में बाँटा है, उनको श्रोतागण आज भी याद करते हैं।

समस्या यह है कि वातावरण बने कैसे? आर्यसमाज के कार्यों और गतिविधियों का पुनरावलोकन कहाँ से आरम्भ किया जाए। छोटी इकाई एक सदस्य है और बड़ी इकाई सार्वदेशिक सभा है। छोटी इकाई यदि सँभल जाए तब बड़े को संभलना पड़ेगा। अतः छोटी इकाई पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसकी तैयारी कैसे हो? आरम्भ घर से किया जाए। अपने घर को आर्य बनने की प्रयोगशाला के रूप में मानकर चलें। घर के बुजुर्ग एवं माता–पिता आदि पूज्य जनों का आदर–सत्कार ऐसे किया जाए मानों पितृयज्ञ कर रहे हैं। पितृयज्ञ में अपने गुरुजनों का आदर सम्मान ही तो करना होता है, उसी को कार्यरूप दे देना वास्तविक पितृयज्ञ बनेगा। पतिव्रता बने रहने का उपदेश सब कोई करते हैं, किन्तु आर्यसमाज जहाँ पतिव्रत धर्म को आवश्यक मानता है, वहाँ पत्नीव्रत धर्म की आवश्यकता पर भी बल देता है। वह पत्नी को आर्यसमाज के सिद्धान्तों, संस्कारों और यज्ञों की जानकारी ऐसे सरल ढंग से देता रहे मानो पत्नी के पति गृह में प्रवेश के साथ–साथ अनायास ही आर्यसमाज में दीक्षित हो जावे, यह सब काम कड़ाई और कठोर अनुशासन से नहीं हुआ करते। होना यह चाहिए कि पत्नी की यदि गीता और रामचरितमानस तक पहुँच है तो उसके साथ ऐसे ही प्रसंगों से बातचीत की जाए। भावी संतति के निर्माण में माता का दायित्व सर्वप्रथम आता है। यदि माता की ओर से बच्चों में आर्यसमाजी संस्कार जन्मघुट्टी की तरह संस्कारित हो जाएँ तभी आर्यसमाज का संस्कार वंशानुगत चल सकता है।

घर के छोटे बच्चों में संस्कार डालने के लिए कुछ प्रयोग इस प्रकार किए जा सकते हैं। जो बच्चे स्कूल जाने योग्य नहीं अथवा नर्सरी में जाने लगे उनसे नमस्ते कराने का अभ्यास करना चाहिए। दोनों हाथ जोड़कर तोतली वाणी से उच्चारित नमस्ते शब्द जहाँ सबको कर्णप्रिय होगा वहाँ बच्चे के माता–पिता आदि को धन्यवाद मिलेगा। कुछ बड़े बच्चे गायत्री मन्त्र का उच्चारण सीख सकते हैं। यदि प्रतिदिन न हो सके तो सप्ताह में एक दिन घर के समस्त बच्चों को साथ लेकर हवन कीजिए। बच्चों के साथ बच्चा बनकर उनकी बात सुनने और अपनी बात कहने का एक अच्छा तरीका बन सकता है। बड़े बच्चों के साथ आर्यसमाज की जानकारी की बात हो सकती है। घर में रडियो, टी.वी. आदि के प्रोग्राम से बच्चों को हटाया नहीं जा सकता है, जिस प्रोग्राम में उनकी रुचि है, उसे देख–सुन लेने पर उनसे समीक्षा कराइए। असभ्य और पाखण्ड भरी बातों की घटना जो उन्होंने देखी होगी, उस पर अपने आप उनको गुस्सा आने लगेगा। शिक्षाप्रद बात को उनसे नोट करने को कहिए। घर में गन्दा साहित्य कोई न पढ़े। इस प्रकार की प्रेरणा से पढ़ने की रुचि में बदलाव आएगा। आर्यसमाजी का जीवन खुली पुस्तक की तरह होना चाहिए। उसके व्यवहार में कहीं छल, कपट, छुपाव व दुराव न हो। घर के किसी सदस्य को उसके प्रति अविश्वास की भावना न आ जाए। अर्थशौच का पूरा–पूरा ध्यान होना चाहिए। इस प्रकार के वातावरण से परिवार में दुर्भावना नहीं होती। आर्यसमाजी के घर कोई उपदेशक, संन्यासी, विद्वान् पधारे तब उनका स्वागत अतिथि यज्ञ की तरह का होना चाहिए, जिससे भावी संतति को भी उन महानुभावों के प्रति श्रद्धा जगे। वर्तमान में बहुधा यह होता है कि आर्यसमाजी अपने घर पधारे ऐसे महात्माओं से कन्नी काटने अथवा दिखावटी आवभगत का नाटक करता है और उसके चले जाने पर घरवालों को कहते हैं कि बेकार में समय बरबाद कर दिया। घर की प्रयोगशाला में संस्कारित आर्यसमाजी के दूसरे मतों के प्रति दायित्व पर विचार करना आवश्यक है।

आज के वातावरण में अड़ोस–पड़ोस के लोग कब कौन हो जाएँ, यह निश्चित नहीं है। पड़ोसी के दुःख–सुख का भागीदार पड़ोसी होता है। इस सभ्यता शिष्टाचार में आर्यसमाजी को विशेष ध्यान रखना चाहिए। धर्म और मान्यताओं से भी बढ़कर मानवता है। पड़ोसी मूर्ति पूजक है अथवा नास्तिक यह उसके धर्म में है, जिसको हम बदल नहीं सकते, अतः इस विचार भेद के कारण उससे मधुर सम्बन्ध की कमी हमारी ओर से नहीं होनी चाहिए। हमें अपने सत्संगों में उनको सम्मिलित करने का प्रयत्न करना चाहिए। अपने मौहल्ले में कोई पाखण्ड फैलानेवाला जुआ व शराब को प्रोत्साहन देने वाला न घुस जाए यह आर्यसमाजी का कर्त्तव्य होना चाहिए। दहेज आदि से होने वाले दुष्काण्ड अपने मौहल्ले में न होने पाएँ यह जागरूकता भी होनी चाहिए।

आर्यसमाजी को अपनी जीविका के क्षेत्र में अपना वर्चस्व रखना चाहिए। उद्योगपति हो अथवा छोटा व्यवसायी, बड़ा आफिसर हो अथवा क्लर्क, सर्वत्र आर्यसमाजी के व्यवहार और आचार की गरिमा बनी रहनी चाहिए। महर्षि ने व्यवहार सम्बन्धी बातों की एक सुन्दर पुस्तक "व्यवहारभानु" लिखी है, यह बड़ी उपयोगी है। इस पुस्तक के लिखने से ऋषि के उस उद्देश्य का प्रमाण मिलता है कि आर्यों को व्यवहार में आर्यत्व अपनाने पर कितना आग्रह ऋषिवर का था। आर्यसमाजी की सच्चाई का प्रभाव विरोधियों और प्रतिस्पर्धा वालों पर भी होना चाहिए। आजकल राजनैतिक मञ्चों का बोलबाला है। प्रजातान्त्रिक देश में अपने अलग–अलग राजनैतिक क्षेत्र बन जाते हैं। आर्यसमाज अपने को किसी पार्टी विशेष से बाँधने का आग्रह नहीं करता। साथ ही आर्यसमाज अपने सिद्धान्तों का परित्याग करके राजनैतिक बन जाने की अनुमति भी नहीं देता। वर्तमान राजनेताओं की तरह आर्यसमाजी की पब्लिक लाईफ और पर्सनल लाइफ का मापदण्ड अलग–अलग नहीं होना चाहिए। आर्यसमाजी को अपने आचार–विचार, व्यवहार से सच्चरित्र बना रहना चाहिए, चाहे वह किसी पार्टी का नेता हो अथवा कार्यकर्त्ता।

आर्यसमाजी की सच्चरित्रता की सुगन्धि यदि जीवन के प्रत्येक पहलू में आने लगे तब आर्यसमाज स्वतः प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेगा। तब आर्यसमाज को केवल दिखावे के लिए न लम्बे जुलूस निकालने होंगे और न ही राजनेताओं के आशीर्वाद लेने के लिए उनको आवेदन पत्र देने होंगे। महर्षि ने गाँव–गाँव में जाकर आर्यसमाज की स्थापना का बीड़ा उठाया था, उसके पीछे उनकी जो भावना थी उसे जागृत करना आवश्यक है। पिछले 125 वर्षों में आर्यसमाजों की संख्या 5550 हो गई है जो कि बहुत अधिक नहीं कही जा सकती। इन आर्यसमाजों की गतिविधियों का वर्गीकरण कुछ इस प्रकार है–

1. आर्यसमाजों की अधिक संख्या शहरों में है गाँवों में कम है।
2. अधिकांश आर्यसमाज केवल नाम मात्र के हैं। साप्ताहिक सत्संग कर लेना ही पर्याप्त समझ लिया है।
3. कुछ आर्यसमाजों के साथ बड़े–बड़े भवन और संस्थाएँ जुड़ी हैं, जिनके कारण सिर फुटोव्वल होती है और नए सदस्यों का प्रवेश प्रायः बन्द किया हुआ है।

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

ढोंगी, पाखण्डी और अपराधी बाबाओं का इलाज बीजेपी नहीं कर सकती

● डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

वेदविरुद्ध इस श्लोक को पाखण्डियों ने इतनी प्रतिष्ठा दे दी है कि पाखण्डी बाबा अपनी शिष्याओं से कहते हैं कि "क्योंकि तुमने हमारे साथ साधु बनते वक्त तन–मन–धन सब सद्गुरु के अर्पण करने को कहा था, तो अब ये तन–मन हमारा है।" डेरा सच्चा सौदा (झूठा सौदा किसे कहेंगे?) सिरसा के बाबा राम रहीम गुरमीत सिंह से पीड़ित साध्वी ने प्रधानमन्त्री तथा हाईकोर्ट पंजाब–हरयाणा के मुख्य न्यायाधीश के नाम जो चिट्ठी लिखी थी उसकी ये पंक्तियाँ है। पीड़ित साध्वी से बाबा राम रहीम ने यह भी कहा था–"श्रीकृष्ण भगवान् थे, उनके यहाँ 360 गोपियाँ थीं जिनसे वह हर रोज प्रेम–लीला करते थे। फिर भी लोग उन्हें परमात्मा मानते हैं, यह कोई नई बात नहीं है।" वस्तुतः एक पत्नी (रुक्मणी) वाले श्रीकृष्ण के जीवन में ऐसा कुछ नहीं था। महाभारत में उन्हीं 360 या हजारों रानियों तथा गोपियों से रासलीला की तनिक भी चर्चा नहीं है। ऐसे पापी बाबाओं और गुरुओं ने ही श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में ऐसी बातें ब्रह्मवैवर्त्त पुराणादि में लिखी हैं, जिनका खण्डन ऋषि दयानन्द को करना पड़ा और आजतक आर्यसमाज वेदविरुद्ध भागवत पुराणादि का खण्डन करता चला आ रहा है। आर्यसमाज जैसी धार्मिक सुधारक संस्थाओं के क्षीण और प्रभावहीन हो जाने के कारण देश में ऐसे ढोंगी–पाखण्डी बाबाओं का जाल बिछता जा रहा है। दैनिक भास्कर' के ग्रुप एडिटर कल्पेश याग्निक (अंग्रेजी के गलत उच्चारण के कारण 'याग्निक' लिखा जा रहा है, इसकी शुद्ध वर्त्तनी है–याज्ञिक) लिखते हैं–"हमें खुलकर पता है कि प्रत्येक सौ में से निन्यानवे बाबा–साधू–सन्त–स्वामी वास्तव में ढोंगी हैं, पाखण्डी हैं, भ्रष्ट हैं, पथ–भ्रष्ट हैं या यौन अपराध में लिप्त हैं। आपराधिक–असामाजिक गुण्डों–बदमाशों को अनुयायी बना बैठे हैं। नाना प्रकार के कौतुक कर, अन्धविश्वास पैदा कर रहे हैं। धोखाधड़ी कर अन्धेर फैला रहे हैं और मनघढ़न्त, असत्य–आधारित प्रचार–प्रसार कर लाखों भोले–भाले नागरिकों को अन्ध भक्त बनाने में कुटिलतापूर्वक सफल हो रहे हैं।"

बाबा राम रहीम के गुण्डों (अनुयायियों) द्वारा नंगा नाच किया गया। करोड़ों की सम्पत्ति जलाई गई या बरबाद कर दी गई। 40 लोग मारे गए, हरियाणा–पंजाब और देश के अन्य भागों के लाखों–करोड़ों लोगों को अनगिनत कष्ट भुगतने पड़े। इसका जिम्मेदार कौन है? पंजाब–हरियाणा हाईकोर्ट के तीन जजों की फुल बेंच ने हरियाणा सरकार को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा–"पञ्चकूला में धारा 144 लागू करने के फैसले को गलत तरीके से ड्राफ्ट किया गया, यह गलती नहीं जानबूझकर किया गया। बिना राजनैतिक दबाव के ऐसा नहीं होता। यदि हम इस मामले की गहराई में जाएँगे तो कितने चेहरे बेनकाब होंगे, इसका अन्दाजा हमें है। हमें यह पता है कि राजनैतिक निर्णय ने प्रशासनिक निर्णय को पंगु कर दिया था, जिसका नतीजा शहर ने ही नहीं बल्कि पूरे हरियाणा ने भुगता।" बीजेपी सांसद साक्षी महाराज द्वारा सीबीआई कोर्ट और हाईकोर्ट के विरुद्ध की गई टिप्पणी पर हाईकोर्ट ने कहा कि "अदालत आलोचना के लिए तैयार है, लेकिन किसी प्रकार का दबाव सहन नहीं किया जाएगा। जो राजनैतिक प्रचार के भूखे हैं, उन्हें अपनी भूख मिटा लेने दो।" कोर्ट ने प्रधानमन्त्री को भी नहीं छोड़ा। उनके प्रति भी कोर्ट की सख्त टिप्पणी थी–'वे देश के प्रधानमन्त्री हैं, न कि भाजपा के।'

तथाकथित बाबा राम रहीम के दुष्कर्म के आरोपी के रूप में अदालत के सामने जाने से पहले और फिर दुष्कर्म के दोषी के तौर पर अदालत से जेल जाने के बाद हरियाणा और पंजाब में जो कुछ हुआ वह भारतीय लोकतन्त्र को शर्मसार करने वाला है। हरियाणा की खट्टर सरकार और पुलिस ने अतीत की भूलों से कोई सबक नहीं लिया। पहले बाबा रामपाल की गिरफ्तारी में उसके पसीने छूटे थे, फिर जाट आन्दोलन के दौरान उसकी नाकामी सबने देखी थी। यह राजनैतिक इच्छाशक्ति के घोर अभाव और वोटप्रेम के आगे अपनी मूल जिम्मेदारियों को ताक पर रखने का ही नतीजा है कि अराजकता के आगे कानून का शासन ध्वस्त–सा हो गया। बाबा राम रहीम ने हालिया चुनाव में अकाली–भाजपा गठबन्धन की मदद इसलिए की ताकि उसे सीबीआई मामलों में राहत मिल सके। किन्तु 15 वर्ष पहले साध्वी के यौन–शोषण मामले में कुल 20 साल की सजा सुनाने वाले सख्तमिज़ाज़ और अपने कड़े फ़ैसलों के लिए मशहूर जज जगदीप सिंह किसी दबाव में नहीं आए। बाबाओं का यह वोट बैंक का गणित थोकबन्द वोटों के सौदागर नेताओं के लिए वैसे तो पूरे देश के लिए अभिशाप है, किन्तु पंजाब और हरियाणा के राजनैतिक खिलाड़ी इस खेल में विशेषरूप से माहिर हैं। पहले कांग्रेस यह खेल खेलती थी (सीबीआई के जाँच अफसर ने समाचार चैनल के एंकर के प्रश्न पर यह खुलासा किया था कि कांग्रेस के 4–5 सांसदों ने मुझ पर यह दबाव डाला था कि मैं इस केस को रफा–दफा कर दूँ) अब भाजपा ने भी यह खेल सीख लिया है। अकालियों ने भी इन डेरों को संरक्षण देकर अपने दो कार्यकाल पूरे कर लिए। यदि कोई बहादुर पत्रकार दुष्कर्म के आरोप की गहराई में जाता है तो उसे गोली मार दी जाती है जैसे 'पूरा सच' अखबार के पत्रकार रामचन्द्र छत्रपति के साथ हुआ। परिणाम यह है कि बाबाओं को लगता है कि वे कानून से ऊपर हैं, जब तक कि सीबीआई कोर्ट के बहादुर जज जगदीप सिंह बाबाओं द्वारा खुद की लिखी पटकथा को बदल नहीं देते। आइए! कुछ अन्य बाबाओं की भी बानगी ले लें–

1. सतलोक आश्रम का संस्थापक रामपाल–रोहतक के करोंथा और हिसार के बरवाला में आश्रम चलाने वाले रामपाल पर देशद्रोह, हत्या जैसे केस चल रहे हैं। अभी जेल में हैं। हत्या के आरोपी रामपाल ने 2010 से 2014 के बीच 42 बार कोर्ट में पेशी नहीं दी। जब 2014 में पुलिस उसे गिरफ्तार करने पहुँची तो उसके अनुयायियों ने एक सप्ताह तक रेल और सड़क यातायात अवरुद्ध रखा और आश्रम को चारों तरफ से घेर लिया। इन्हें हटाने में प्रशासन को बड़ी मशीनों की सहायता लेनी पड़ी। उसके हिसार आश्रम के अन्दर पुलिस को पाँच महिलाओं व 18 माह के शिशु का शव मिला।

2. इच्छाधारी भीमानन्द–1998 में दिल्ली के एक होटल में वर्ल्ड की नौकरी करने वाले श्रीमूरत द्विवेदी ने खुद को स्वामी भीमानन्द बना लिया। 2010 में सेक्स रैकेट चलाने के आरोप में गिरफ्तार हुए।

3. रामवृक्ष यादव (2016 में मृत्यु)– यह अपने को उत्तरप्रदेश की स्वाधीन भारत सुभाष सेना का प्रमुख तथा मथुरा के धर्मगुरु जय गुरुदेव का शिष्य कहता था। 2016 में जब पुलिस मथुरा के जवाहर बाग में डेरा जमाए बैठे यादव और उसके दो हजार से अधिक समर्थकों को हटाने पहुँची, तो वहाँ हिंसा का माहौल बन गया। इस हिंसा में यादव समेत 24 लोगों की जान गई। बाद में जवाहर बाग के अतिक्रमण को जय गुरुदेव की 12 हजार करोड़ रुपये की सम्पत्ति को लेकर समर्थकों में चल रहे विवाद से जोड़ा गया।

4. स्वामी नित्यानन्द–बेंगलुरु की ध्यानपीठ चैरिटेबल संस्था के धार्मिक गुरु स्वामी नित्यानन्द का 2010 में एक तमिल एक्ट्रेस के साथ आपत्तिजनक वीडियो लीक हुआ। पूर्व अनुयायी ने यौन शोषण का आरोप लगाया। इस मामले में नित्यानन्द गिरफ्तार हुए और फिलहाल जमानत पर हैं।

5. आशुतोष महाराज (जनवरी 2014 में मृत्यु)– पंजाब के दिव्य ज्योति जागृत संस्थान के संस्थापक जनवरी, 2014 में हृदयघात से मरने वाले आशुतोष महाराज के कट्टर अनुयायियों ने उन्हें मृत मानने से इनकार करते हुए उनके पार्थिव शरीर को जलाने नहीं दिया। अनुयायी मानते हैं कि वे समाधि में हैं और लौटेंगे। पंजाब और हरियाण हाईकोर्ट ने पाँच जुलाई, 2017 को उनके शरीर को एक शीशे के कमरे में डीप फ्रीजर में रखने की अनुमति दी है। अब उनके उत्तराधिकार का मामला विवादित है।

6. बालक ब्रह्मचारी–पश्चिम बंगाल के हुगली में सनातन दल के संस्थापक बालक ब्रह्मचारी की मई, 1993 में मृत्यु हो गई। सरकार द्वारा कई नोटिस भेजने के बाद भी जब उनके अनुयायी उनका अन्तिम संस्कार करने को तैयार नहीं थे, तो पुलिस उनके आश्रम में घुस गई। चार घण्टे तक दो हजार अनुयायियों से लड़ने के बाद पुलिस आश्रम की दूसरी मंजिल पर पहुँची जहाँ उनका शरीर रखा था। आश्रम में कुछ बम भी पाए गए। उनके अन्तिम संस्कार में 55 दिन का विलम्ब हुआ और 450 पुलिस वालों की जरुरत पड़ी।

7. चन्द्रास्वामी (मई, 2017 में मृत्यु)– चन्द्रास्वामी का असली नाम नेमी चन्द जैन था। करोड़ों की सम्पत्ति के मालिक थे। पूर्व प्रधानमन्त्री पीवी नरसिंह्मा राव के करीबी माने जाते थे। उन्हें एक समय देश के बड़े पावर ब्रोकरों में गिना जाता था। उन पर राजीव गाँधी की हत्या में शामिल होने का आरोप भी लगाया गया था।

8. आनन्द मूर्ति (प्रभात रंजन सरकार, अक्टूबर, 1990 में मृत्यु)–पत्रकार, रेलवे क्लर्क और अन्त में आनन्द मार्ग के संस्थापक प्रभात रंजन सरकार को 1971 में आनन्द मार्ग के छह पूर्व सदस्यों की हत्या करवाने के आरोप में जेल भेजा गया। इस संस्थान के 85 देशों में 40 लाख सदस्य थे। प्रभात रंजन सरकार (आनन्द मूर्ति) को रिहा कराने की माँग करते हुए संस्था के सदस्यों ने हिंसा करनी शुरु कर दी। इस हिंसा में ऑस्ट्रेलिया की राजधानी कैनबेरो में भारत के काउंसलिंग जनरल की हत्या और मेलबर्न में एयर इण्डिया के अधिकारी की हत्या शामिल है। काठमांडू के भारतीय दूतावास में बम विस्फोट किया गया। 1995 के पुरुलिया केस में भी इस संस्था का नाम आया।

9. आसाराम बापू–गुजरात, मध्यप्रदेश समेत कई राज्यों में इनके आश्रम हैं। उनके गुरुकुल में दो छात्रों की मौत के बाद कानून का शिकंजा कसा। 2013 में नाबालिग लड़की से दुराचार करने के मामले में जेल में हैं। उनका बेटा नारायण साईं भी दुराचार के मामले में जेल में है। बाबा बनने से पहले आसाराम साइकिल मेकेनिक था।

अब सवाल यह है कि इन बाबाओं के गुरुडम और पाखण्ड से धर्मप्रेमी जनता को कैसे बचाया जाए? इसका इलाज किसी राजनैतिक दल के पास नहीं है। हिन्दुओं की ठेकेदारी का दावा करनेवाली (या दम भरनेवाली) विश्व हिन्दू परिषद् या उसकी मातृ संस्था राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भी इसका इलाज नहीं कर सकती। उनकी रुचि इन बाबाओं या हिन्दुओं में नित्य नए–नए पैदा होनेवाले धर्मध्वजी पाखण्ड मत–मतान्तरों को रोकने या नियन्त्रित करने में नहीं है। उनका सारा जोर गैर हिन्दुओं की अराष्ट्रीय और अराजक कारगुजारियों को नियन्त्रित करने पर है। किन्तु जब तक इन बाबाओं–पाखण्डियों को ध्वस्त नहीं किया जाता तब तक हिन्दू धर्म का क्षरण कोई रोक नहीं सकता। यह काम तो आर्यसमाज का है। पर कई दशकों से आर्यसमाज रुग्ण हो गया है। चिकित्सक जब स्वयं बीमार हो तो इलाज कौन करेगा? करोड़ों–अरबों की सम्पत्ति के मालिक आर्यसमाज के पास आज के प्रचार–युग में एक टी.वी. चैनल तक नहीं है। यदि आर्यसमाज का कोई चैनल होता तो इन धर्मध्वजी पाखण्डी गुरुओं और बाबाओं की पोल रोज खोली जाती। हस्तरेखा, जन्मकुण्डली, फलित ज्योतिष और तान्त्रिकों का जो मायाजाल धर्म के नाम पर प्रतिदिन अखबारों तथा चैनलों द्वारा प्रसारित किया जाता है, उस पर भी आर्यसमाजी चैनल बहुत सीमा तक रोक लगा देता। तब हम अपने चैनल पर इन पाखण्डों की अवैज्ञानिक (तत्वतः ज्योतिष के ही सिद्धान्तो के विरुद्ध) मान्यताओं का खुलकर खण्डन करते, बहस करते और शास्त्रार्थ की चुनौती देते। ऋषि दयानन्द, गुरुदत्त, लेखराम, दर्शनानन्द से लेकर रामचन्द्र देहलवी और स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती तक के अनुयायियों और उत्तराधिकारियों के सामने आज यह यक्ष प्रश्न उपस्थित (और अनुत्तरित) है कि विगत 20 वर्षों से मुकदमें लड़ रहे आर्यनेताओं को सच्चे सीधे रास्ते पर कैसे लाया जाए? और ऋषि दयानन्द की क्रान्तिकारी अग्नि को कैसे प्रज्वलित किया जाए?

अध्यापक आगम स्टेशन रोड़
अमेठी, उ. प्र. 227405
मो. 09415185521

अभिनन्दनीय प्रो. उत्तमचंद जी 'शरर'

● डॉ. राणा प्रताप गन्नौरी

महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके आर्य समाज ने जिन अनेक देशभक्तों, कवियों और साहित्यकारों को प्रेरित एवं स्फूर्त किया है उनकी सूची बहुत लम्बी है। लाला लाजपतराय, शहीदे–आज़म भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद जैसे देशभक्त, प्रो. तिलोकचंद महरम, कवि शंकर, प्रकाश कवि, श्री जैमिनी सरशार, प्रो. उत्तमचंद शरर, जैसे कवियों और शायरों, मुंशी प्रेमचंद, सुदर्शन, महाशय कृष्ण, महात्मा आनंद स्वामी (श्री खुशहाल चंद खुरसंद) जैसे साहित्यकारों के व्यक्तित्व और कृत्तित्व पर आर्य समाज की गहरी छाप दिखाई देती है। ऋषि दयानंद के हज़ारों श्रद्धालु भारत के स्वतंत्रता संग्राम के बलिदानी वीर रहे हैं। सरकारी साक्ष्यों के आधार पर कहा गया है कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जेलों की कठोर यातनाएँ सहने वालों में सर्वाधिक प्रतिशत (लगभग 80 प्रतिशत) आर्य समाजी लोगों का रहा है। समाज सुधार, रूढ़ि विरोध, शिक्षा–प्रचार, अन्याय से संघर्ष आदि सभी क्षेत्रों में आर्य समाज अग्रणी रहा है। इसी आर्य समाज के संस्कारों एवं विचारों से प्रेरित एवं स्फूर्त व्यक्तित्व एवं कृतित्व है हमारे अभिनंदनीय सुप्रतिष्ठित कवि, शायर, वक्ता, प्राध्यापक, उपदेशक एवं स्वतंत्रता सेनानी श्रद्धेय प्रो. उत्तम चंद 'शरर' का। उनका कद छोटा था किन्तु व्यक्तित्व बड़ा।

ऋषि भक्त 'शरर' साहब को मैं तब से जानता हूँ जब अभी मैं बच्चा था और यह भी नहीं जानता था कि आगे चलकर मैं आर्य समाज का सक्रिय सेवक बनने और कलम की साधना करने का सौभाग्य प्राप्त करूँगा, शेर लिखने लगूँगा और 'शरर' साहब की अध्यक्षता में कविता का पाठ करने के अवसर पर प्राप्त करने लगूँगा। मैं अपने पिता श्री जैमुनी लाल जी भुटानी के साथ जाकर आर्य समाज के उत्सवों में और कवि सम्मेलनों में 'शरर' साहब के प्रभावपूर्ण काव्य और धारा प्रवाह प्रवचनों को मंत्र मुग्ध होकर सुना करता था। उस समय तो मुझमें दो वक्ताओं की तुलना करने की सुध–बुध नहीं थी किंतु आज जब मैं इस दृष्टि से विचार करता हूँ तो निष्कर्ष स्वरूप कह सकता हूँ कि 'शरर' साहब को निःसंकोच हमारे इलाके का प्रकाश वीर शास्त्री कहा जा सकता है। मैं ऐसे महानुभावों के प्रवचन सुन–सुन कर स्वयं मंच पर कुछ बोलने की प्रेरणा प्राप्त किया करता था। होते–होते वह समय भी आया जब मैं शायरी करने लगा था और सबसे प्रथम कवि सम्मेलन जिसमें मुझे मेरे प्रथम काव्य गुरु श्री हरिश्चंद्र 'नाज़' सोनीपती अपने साथ कविता पाठ के लिए ले गए थे, आर्यसमाज लाजपत नगर सोनीपत का अक्टूबर 1946 में होने वाला कवि सम्मेलन (मुशायरा) था। बाद में मैंने स्व. श्री मनोहर लाल 'शहीद' अलीपुरी और श्री जैमिनी 'सरशार' सोनीपती साहब से मार्गदर्शन प्राप्त किया तो वे दोनों महानुभाव भी निष्ठावान आर्यसमाजी थे। धीरे–धीरे पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश में आयोजित आर्य महासम्मेलनों में आयोजित होने वाले कवि सम्मेलनों में आमंत्रित किया जाने लगा तो कई विराट कवि सम्मेलनों में 'शरर' साहब की अध्यक्षता में कविता पाठ करने का सौभाग्य प्राप्त करता रहा। ऐसे सम्मेलनों में पानीपत, दिल्ली, अलवर, मोही और अमरोहा में आयोजित कवि सम्मेलन यादगार थे। इस प्रकार 'शरर' साहब मेरे लिए सदैव प्रेरक व्यक्तित्व रहे हैं।

ऊपर मैंने अपने इलाके की बात की है। व्यापक दृष्टि से हमारा इलाका वह है जिसने पं. चमूपति एम.ए. (बहावलपुर), पं. गुरूदत्त विद्यार्थी (मुलतान), पं. शांति प्रकाश शास्त्रार्थ महारथी (डेरा ग़ाजीखां), महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज (जतोई, मुज़फ्फरगढ़), महात्मा आनंद भिक्षु जी (झुग्गीवाला, मुज़फ्फरगढ़) जैसे वैदिक मिशनरी विभूतियों को जन्म दिया। और यदि संकुचित या सीमित अर्थ में तथा शायरों को जन्म देने वाली एक तहसील को अपना इलाका कहूँ तो मेरा अभिप्राय केवल तहसील अलीपुर जिला मुज़फ्फरगढ़ से होगा। तहसील अलीपुर को 'शायर–खेज़' यानि कवि–प्रस्विनी माना जाता रहा है। इस इलाके के एक दर्जन से अधिक शायर–सर्वश्री ज़ैमिनी सरशार, मनोहर लाल शहीद, आतिश बहावलपुरी, तबस्सुम अलीपुरी, चंद्रभान 'मफलूक' तेजा लाल मौजी, बेलाराम दीवान, रामचंद्र खुशदिल आदि दिवंगत तथा उत्तमचंद जी शरर, हरिश्चंद्र नाज़, बेताब अलीपुरी, राधाकृष्णन आज़ाद, बोधराज ज़फ़र, तेजभान निश्तर, राणा प्रताप गन्नौरी, ए. वी. भारती, देवराज दिलबर आदि वर्तमान उर्दू, हिन्दी, मुलतानी (सरायकी) शायरी के प्रतिष्ठित हस्ताक्षर हैं। इनमें से अधिकांश एक से अधिक भाषाओं में काव्य सृजन करते हैं। प्रो. उत्तम चंद जी शरर भी उर्दू तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में काव्य रचना करते थे। इस समय जब कि मैं ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ, कह सकता हूँ कि हमारे इलाके के सबसे वयोवृद्ध शायर 'शरर' साहब का जन्म 15 नवम्बर 1916 ई. को गाँव सीतपुर तहसील अलीपुर जि. मुज़फ्फरगढ़ (पाकिस्तान) में श्री मंगूराम बजाज के घर पर हुआ। इनकी माताजी का नाम श्रीमती उत्तमीबाई था।

'शरर' साहब एक विद्या व्यसनी, अध्यवसायी एवं सरल स्वभाव व्यक्ति थे। उनके जीवन में सादगी भरपूर थी, आडम्बर तनिक भी नहीं। उन्होंने हिन्दी तथा संस्कृत में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की है। उर्दू का उन्होंने प्राथमिक शिक्षा से ही अध्ययन किया था तीनों भाषाओं पर समान अधिकार रखते थे। स्नातक स्तर तक अंग्रेजी भी पढ़ी है। और माँ ने जिस बोली की घुट्टी डाली है वह है मुलतानी या जिसे अब सरायकी नाम से जाना जाता है। भाव यह कि शरर साहब एक बहुत भाषाविद प्रबुद्ध व्यक्ति थे। आपने अपना सारा जीवन अध्यापन एवं आर्य समाज के प्रचार में व्यतीत किया था। आर्योपदेशकों में आप का सम्माननीय स्थान था। आप आर्य महाविद्यालय पानीपत, आर्य कन्या महाविद्यालय लुधियाना तथा डी.ए.वी. कन्या महाविद्यालय करनाल में हिन्दी के प्राध्यापक के पद पर कार्य करते रहे थे और करनाल में ही सेवा निवृत्त हुए थे। निवास आपका स्थायी रूप से पानीपत में ही रहा है। आर्योपदेशक के रूप में देश भर में आपकी एक प्रभावशाली छवि रही। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र में स्थित विभिन्न आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सवों की शोभा आप बढ़ाते रहे। आपकी विद्वता की सुगंध भारत की सीमाओं से बाहर भी पहुँची। कुछ वर्ष पूर्व वैदिक विचारधारा का प्रचार करने हेतु आप अफ्रीकी देश केनिया की राजधानी नैरोबी भी गये थे। चार पाँच वर्ष पूर्व जब आपको अचानक 'पैरेलिसिस' का आघात लगा उस समय भी उत्तर प्रदेश में बनारस के निकट किराकत आर्यसमाज में मंच पर बोल रहे थे।

आप ईश्वर–विश्वासी और प्रबल बनोबल के धनी व्यक्ति थे। प्रवास में अचानक 'पैरेलिसिस' का अटैक होने पर आपने हिम्मत नहीं हारी। वहाँ से प्रारम्भिक उपचार लेने के बाद अकेले ही दिल्ली होते हुए पानीपत आ पहुँचे। यहाँ पहुचँने पर इनके पितृभक्त सुपुत्रों ने तुरंत इनके सुचारु उपचार की व्यवस्था की और कुछ महीनों में 'शरर' साहब पुनः आर्य समाज की सेवा और वेद प्रचार के कार्य में सक्रिय दिखाई देने लगे। ठीक ही तो कहा गया है मन के जीते जीत है मन के हारे हार। 'शरर' साहब ने संकट पर विजय पाई। अपने यौवन काल से ही संकटों से जूझना उनका स्वभाव रहा है। आर्य समाज के हैदराबाद आंदोलन में भारत के दूर पश्चिमोत्तर में स्थित गाँव सीतपुर से ऋषि दयानंद के धर्म रक्षक सैनिक के रूप में सम्मिलित होकर आपने निज़ाम हैदराबाद के द्वारा हिन्दू धार्मिक गतिविधियों पर लगाए प्रतिबंधों के विरुद्ध संघर्ष किया था और आर्य समाज के इस विजय–अभियान में कृतकार्य होकर स्वतंत्रता–सेनानी होने के गौरव के अधिकारी बने थे।

साहित्य–सृजन की दृष्टि से आप गद्य–पद्य दोनों में ही कलम के जौहर दिखाते रहे हैं। गद्य में आपने पत्र–पत्रिकाओं और अभिनन्दन ग्रंथों के लिए लेख लिखे हैं तो पद्य में उर्दू तथा हिन्दी में कविता के विभिन्न रूपों तथा नज़्म, ग़ज़ल और कतआत (मुक्तकों) में अपने भावों और अनुभवों को अभिव्यक्ति प्रदान करते रहे। नज़्म आपका खास मैदान रहा है। इस तरह आपकी सात पुस्तकें–आर्यों का शिकवा–जवाब शिकवा, 'फूल और काँटे' (उर्दू में) 'इन्द्र धनुष', "वैदिक स्वर्ग", "तीन अनादि तत्त्व" "सामगान" और चंद गलतियों का अज़ाला" हिन्दी में छप चुकी हैं।

अब तक आपकी और भी न जाने कितनी कृतियाँ प्रकाशित होकर आपकी कीर्ति फैला चुकी होती किन्तु मस्तमौला स्वभाव के 'शरर' साहब को हम आत्म प्रचार की दिशा में सोचने की फुरसत ही कहाँ मिली थी। यहाँ तक कि अपने काव्य का पुनरावलोकन करने और नोक पलक सँवारने तथा दोष दूर कर लेने का समय भी नहीं निकाल पाए। अंग्रेजी भाषा की उक्ति "रिविज़न इज़ द हाफ़ करैक्शन' को तो जैसे उन्होंने सिरे से भी भुलाए रखा। 'शरर' साहब के इन्द्रधनुषी काव्य में वेदमंत्रों के पद्यानुवाद, महर्षि दयानंद और उनके बलिदानी वीर सेनानियों (स्वा. श्रद्धानंद, पं. लेखराम, स्वा. समर्पणानंद, महाशय कृष्ण आदि), आर्य समाज और देशभक्त वीरों के बारे में भावपूर्ण कविताएँ (नज़्में), गजलें और कतआतं सम्मिलित हैं। कुछ ब्लैंक वर्स शैली में लिखित कविताएँ भी हैं। जहाँ अधिकांश रचनाएँ उर्दू में हैं वहाँ कुछ रचनाएँ हिन्दी में भी हैं। जहाँ तक शरर साहब की रचनाओं के रंगों–आहंग (मुख्यस्वर) का प्रश्न है– देशक्ति, ऋषि भक्ति, वेद निष्ठा, स्वाभिमान (खुदी) एवं क्रांति का स्वर हो इनका मुख्य स्वर रहा है। अल्लामा इकबाल की खुदी को बुलंद रखने की धारणा से शरर साहब बहुत प्रभावित रहे। इनकी नज़्मों 'आर्यों का शिकवा जवाब–शिकवा' का प्रेरणास्रोत भी डॉ. इकबाल का 'शिकवा–जवाज शिकवा' रहा है। प्रिंसिपल रामचंद 'जावेद' सम्पादक "वैदिक धर्म का मानना था कि 'शरर' साहब आर्य समाज के इकबाल हैं। उनके लहजे में पं. चमूपति की कविताओं का लहजा भी झलकता था। आर्य समाज के विशेष समारोहों का कार्यक्रम 'शरर' साहब के कविता पाठ के बिना प्रायः अधूरा समझा जाता रहा था।

ऋषि दयानन्द जी के जीवन काल में और पूरे स्वाधीनता संग्राम की अवधि में आर्य समाजियों में जो ऊर्जा, ओजस्विता, सत्य निष्ठा, राष्ट्र–प्रेम, बलिदान की भावना, वैदिक आस्था, कर्तव्य परायणता, मन, वचन और कर्म की शुचिता देखने को मिलती थी वह अपनी मिसाल आप थी। बुजुर्गों से सुनने को मिलता रहा है कि न्यायालय में एक आर्यसमाजी की गवाही अपने आप में सत्य का प्रमाण मानी जाती थी। उच्चाशयता आर्यजन की पहचान समझी जाती थी। इसीलिए तो आर्यसमाजी को लोग महाशय जी कह कर पुकारते थे। आर्य समाज की गतिविधियों में वृद्ध, युवा, पुरुष, स्त्री सभी बढ़–चढ़ कर भाग लेते थे। आर्य समाजों की शोभायात्राएँ और प्रभात फेरियां, वार्षिकोत्सव और शास्त्रार्थ दर्शनीय होते थे। आर्य विद्वानों के तर्क सुनने वालों को भीतर तक झकझोर कर रख देते थे। सुनने वाला व्यक्ति कहने वाले की तर्कपूर्ण बात सुनकर अनायास ही पूछ बैठता था– आप आर्य समाजी हैं क्या? यानि एक आर्यसमाजी की सोच जन साधारण से अलग होती थी। किंतु यह वृतांत आर्य समाज के स्वर्ण युग का इतिहास है। अब भवन पक्के हो गए हैं, भावना कच्ची हो गई है। कुर्बानियां देने वाली पीढ़ी चुक गई है। आर्य समाज के सत्संगों में प्रौढ़ और वृद्ध लोग ही दिखाई देते हैं, युवा नहीं। किसी संगठन के प्रति जब तक युवाओं का लगाव और सक्रिय योगदान न हो उस संगठन के भविष्य के बारे में चिंता उत्पन्न होना स्वाभाविक है और इस उदासीनता का कुछ क्रियात्मक समाधान सोचा जाना अनिवार्य है। हमारे प्रो. उत्तम चंद जी 'शरर' को इस चिंताजनक स्थिति का निष्क्रिय दर्शक बने रहना स्वीकार नहीं हुआ। उन्होंने समय की चुनौती को स्वीकारते हुए भावी दायित्व बोध युक्त युवा पीढ़ी संगठित करने का संकल्प धारण करके "आर्य वीर दल" का संगठन किया। जिला और प्रांतीय स्तर पर शिक्षक नियुक्त करके आर्यवीरों की शाखाएँ लगाने और आर्य–वीर महासम्मेलन आयोजित करके युवाओं में एक नई स्फूर्ति, एक नई ऊर्जा संचारित करने का श्लाघनीय उपक्रम किया। युवाओं के लिए शारीरिक व्यायाम, योगासन, पराक्रम प्रदर्शन और बौद्धिक उद्बोधन प्रदान करने की व्यवस्था की गई। 'शरर' साहब के इस अवदान के फलस्वरूप पुनः युवा वर्ग आर्य समाज से जुड़ने लगा है। समय–समय पर लगने वाले शिविरों में जा कर देखने से ज्ञात होता था कि भविष्य के लिए सार्थक समाधान प्रस्तुत हो रहा है। इस सबका श्रेय प्रो. उत्तम चंद 'शरर' जी को ही जाता है। 'शरर' साहब सदैव एक सैनिक की तरह आर्य समाज द्वारा संचालित आंदोलनों में भाग लेने के लिए कटिबद्ध रहे हैं, वह चाहे हैदराबाद आंदालेन हो या स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का हिन्दी आंदोलन अथवा गोरक्षा आंदोलन। उन्होंने जल यात्राएँ भी की हैं और हँसते–हँसते कष्ट भी सहे हैं। उनका व्यक्तित्व निश्चय ही अभिनंदनीय व्यक्तित्व था।

अब तक में 'शरर' साहब के काव्य रूपी दर्पण में झाँक कर उनके कवि रूप की छवि भी देख ली जाए। मैं सर्वप्रथम उसकी जिस रचना से परिचित हुआ था वह थी उनका 'आर्यों का शिकवा जवाब शिकवा'। मंच पर खड़े होकर वह धारा प्रवाह इस का पाठ करते हुए श्रोताओं को इसके प्रवाह में बहा ले जाते प्रतीत होते थे। संस्कृत तथा हिन्दी भक्ति काव्य के अंतर्गत कृष्णकाव्य में 'भ्रमरगीत' प्रसंग के रूप में सुंदर उपालम्भ काव्य के दर्शन होते हैं। गोपियाँ अपने प्रियतम कृष्ण की निष्ठुरता से व्याकुल होकर उलाहने देती हैं। उर्दू काव्य में उपालम्भ काव्य के उदाहरण गज़लों के शेरों में तो अनगिनत मिल जाएँगे किंतु नज़्म की सूरत में डॉ. इकबाल की दो नज़्में शिकवा और जवाब शिकवा 'क्लासिकल काव्य' की हैसियत रखती हैं। इन्हीं दोनों नज़्मों की शैली में प्रो. उत्तम चंद जी 'शरर' ने 'आर्यों का शिकवा' और 'जवाब

शिकवा' नाम से दो नज़्में लिखीं जो प्रायः हर उत्सव में फरमाइश करके उनसे सुनी जाती थीं। 'आर्य का शिकवा' में परिस्थितियों, राजनीति, वेद विरोधी आचरण करने वालों के हाथों पीड़ित आर्य जन अपने इष्ट सर्वशक्तिमान प्रभु को अपने अनन्य, वेदनिष्ठ भक्तों के प्रति उदासीनता एवं निष्ठुरता का गिला करते हैं और जवाब शिकवा में ईश्वर अपने इन भक्तों को आईना दिखाता हुआ अहसास कराता है कि मेरी कृपा के अधिकारी होने का दावा करने वाले तुम लोग कृपा के पात्र नहीं हो। इन दोनों नज़्मों को अलग से पुस्तकार भी छापा गया था और अब 'इन्द्रधनुष' नामक संग्रह के अंत में भी इन्हें सम्मिलित किया गया है। दोनों नज़्में लम्बी नज़्में हैं यहाँ इनके 12+17 पदों में से केवल दो-दो पद ही प्रस्तुत किए जा रहे हैं-

आर्यों का शिकवा-

तू ने देखा कि तेरे चाहने वाले आए
हाथ में वेदे-मुकद्दस को सँभाले आए
सामने तीरो-तबर बछियाँ भाले आए
हमने ज़माने को तेरे दर पे झुका ले आए
वेद मंत्रों की हर इक सिम्त सदा गूँज उट्ठी
नग्मा-ए-ओ३म् से दुनिया की फ़िजा गूँज उठी
कुश्ताए-तेगे जफाकार अगर हैं हम हैं
दौलते-दुन्या की नादार अगर हैं हम हैं
खस्ता-तन, सोख्ता-दिल, ख्वार अगर हैं हम हैं
चश्मे आलम में चुभे ख़ार अगर हैं हम हैं
क्या तेरी भक्ति का इनआम यही होता है?
क्या तेरे भक्तों का अंजाम यही होता है?

जवाब शिकवा-

दफ़अतन आई सदा, चीरती अफ़लाक तमाम?
खत्म कर डाली जो शिकवों पे ही इदराक तमाम।
काश! तुम वाकिफ़े अर्बाबे-बफ़ा भी होते
काश! तुम महरमे-असरारे-बफा भी होते
आज तुम मग़रबी तहजीब के दीवाने हो
धर्म दया चीज़ है? इस राज़ से बेगाने हो
नाम को शम्मे-दयानन्द के परवाने हो
मुझ पे रौशन है जो तुम वेद के मस्ताने हो
वेद अलमारियों में बंद पड़े रहते हैं
रात दिन मन्दिरों पर कुफ्ल जड़े रहते हैं

'शिकवा-जवाब शिकवा' की इस परम्परा को डॉ. सत्यपाल 'बेदार' सरस ने हिन्दी में 'उपालम्भ-प्रत्युपालम्भ' लिखकर और मैंने मुलतानी (सरायकी) में शिकवा-जवाब शिकवा' लिख कर आगे बढ़ाया है।

महर्षि दयानन्द के श्रद्धावान अनुयायी, कांग्रेस के नेता, गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वा. श्रद्धानंद के प्रति लिखी गई कविता 'जय दिग्विजयी जय पुण्यधाम' की पंक्तियां देखिये-

हे तेजस्वी, हे परिव्राट्! हे सत्य निष्ठ, हे पुर्णकाम!
हे आर्य जाति के धवल कीर्ति, तुझको वंदन तुझको प्रणाम।
तू आर्य जाति का प्रहरी सजग, तू भारत माता का सपूत
तू दयानंद का भक्त प्रवर, तू नवल क्रांति का अग्रदूत।
था कवच संगठन का तेरा, शुद्धि का शस्त्र सजा कर में
रण में निकला तू रणंजयी, रिपु दमन कर लिया पल भर में
कण-कण में गूंजी स्वर लहरी जय दिग्विजयी जय पुण्य धाम
हे आर्य जाति की धवल कीर्ति, तुझको वंदन, तुझको प्रणाम।

"दयानन्दे-आज़म" शीर्षक नज़्म में महर्षि दयानंद के व्यक्तित्व का निर्माण करने वाले ओज, शौर्य, धैर्य, शुचिता, गम्भीरता आदि तत्त्वों का काव्यात्मक शैली में सुन्दर वर्णन किया गया है-

सोच कर तब लिया ख़ालिक ने बहारों से निखार
आबशारों से तरन्नुम, तो घटाओं से खुमार
सोज़ बिजली से तो सूरज से तमाज़त ले ली
हौसला धरती से, आकाश से वुसअत ले ली
रौशनी और तबस्सुम महो-अंजुम से लिया
और पाकीज़गी का कतराए-ए-शबनम से लिया
ली समंदर से जो गहराई तो फूलों से हँसी
नग्मा बुलबुल से, पहाड़ों से बुलंदी ले ली
सारे अजज़ा को मुहब्बत से शराबूर किया
तब कहीं एक तड़पता हुआ दिल बन पाया
और उस दिल को लिए 'मूल' जी बेदार हुए
दुनिया वालों को दयानन्द के दीदार हुए।

पृष्ठ 04 का शेष

स्तुति-प्रार्थना..

The world is too much with us; late and soon,
Getting and spending we lay waste our powers:
Little we see in Nature that is ours;
This Sea that learn her bo our to the moon;
The winds that will be howling at all hours,
And are up-gathered now like sleep flowers;
for this for everyting we are out of turn it moves us not.

अब जरा कविवर हरिवंशराय बच्चन की रचना देखिए-

नव किरण का रथ सजा है
कलि कुसुम से पथ सजा है
बादलों से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाकधारी
आ रही रवि की सवारी
चाहता उछलूँ, विजय कह
पर ठिठकता देखकर यह
रात का राजा खड़ा है, राह में बनकर भिखारी
आ रही रवि की सवारी

कविवर सुमित्रानंदन पंत के शब्दों में:-

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि!
तूने कैसे पहचाना?
श्वास शून्य थे तरु के पात,
विचर रहे थे, स्वपन अवनि में
तम ने था मंडप ताना
कूक उठी सहसा तरु-वासिनी!
गा तू स्वागत का गाना,
किसने तुझको अन्तर्यामिनि!
बतलाया उसका आना,

कविगण भी हमें प्राकृतिक सौन्दर्य को निहारने के लिये ध्यान आकर्षित कर रहे हैं।

चन्द्र और सूर्य की शोभा-सौंदर्य अद्भुत है। हम भारतीयों को यह समस्त तारामण्डल बहुत आह्लादकारी लगता है। भोर का तारा, ध्रुव तारा और उसकी चौकड़ी, सब कुछ इस्लाम अनुयायियों को दूज का चांद पसंद है। हमें पूर्णिमा का वह भी विशेषकर शरद ऋतु का, जिसके लिये कहा जाता है कि परमात्मा इस रात्रि, चन्द्र किरणों के रूप में, अमृत की वर्षा करता है। इसलिए शरद-पूर्णिमा को खुले आकाश में दूध रखकर अमृत संजोया जाता है और मध्यरात्रि के बाद पान करने की परम्परा रही है।

चन्द्र की आभा रसभरी और शांतिदायक है, वही सूर्य की प्रभा ओजमयी है ऊर्जावान है। माधुर्य रस का सम्पूर्ण उपभोग भी ऊर्जावान प्राणी ही कर सकता है और करा सकता है। पुरुष ओज का प्रतीक है और नारी शांति और माधुर्य की। सभी जीवधारियों में ओजवान नर ही सौन्दर्य का प्रतीक होता है। सिंह में शक्ति और सौन्दर्य है, शेरनी में नहीं, मोर में सौन्दर्य है। वहीं पंख फैलाकर मनमोहक नृत्य करता है, मोरनी नहीं। फनधारी नाग, जब लम्बवत् स्थिति में फन डोलाता है तो सुन्दर लगता है, नागिन नहीं। इस पुरुष सौन्दर्य का स्वरूप 6 फुट से अधिक लम्बे 56 इंच सीने वाले शक्ति और सौन्दर्य के प्रतीक गौर वर्णीय वाऊनी ने स्वयं मुझे बताया था क्योंकि मुझे कद तो इतना नहीं पर मजबूत काठी पैदाइश में ही मिली थी। मुस्लिम गुलामी के प्रभाव ने हिन्दी कवियों की सोच बदल दी, मति खराब कर दी। शायर तो चौदहवीं के चांद में आफताब देखते हैं। उन्हें जन्नत में भी बड़ी-बड़ी आंखों वाली सदा जवान रहने वाली हूरों का प्रलोभन दिया जाता है।

बात हो रही थी, चन्द्र और सूर्य के सौंन्दर्य की और कहां दूर तक निकल गयीं। सूर्योदय और सूर्यास्त दोनो संधि वेलाएं कही जाती हैं क्योंकि सूर्य और पृथिवी की आभा का मिलन होता है। सम्पूर्ण वातावरण में अजीब शांत निस्तब्धता छा जाती है। पृथ्विगण कलख करते हुए क्षितिज में उड़ान भर रहे होते हैं या नीड़ों की ओर लौट रहे होते हैं। चित्तवृत्ति निरोध का अद्भुत समय परमेश्वर की सृष्टि रचना के अद्भुत सौन्दर्य को देखने का अनुभव कर उसके चिन्तन-मनन में मान होने का समय इसीलिए महर्षि दयानन्द ने इन दो संधिवेलाओं में ही ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का विधान किया है जो वेद सम्मत भी है।

जरा सोचिए तो, जिस सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, निराकार ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का विधान महर्षि दयानन्द ने किया है वह मिट्टी, कागज, प्रस्तर, अथवा धातुओं की मूर्तियों के समक्ष हाथ जोड़कर खड़े होने पुष्प-पत्र, प्रसाद को चढ़ा कर पूजा करने से पूरा हो सकता हैं, या अवतारी महापुरूषों को जो अजर, अमर नित्य नहीं? या उन अत्यन्त वैभवशाली मूर्तियों के समक्ष जहां 5-10 सैकेण्ड में उन्हें धकेल दिया जाता हैं, से हो सकता है? निर्णय आपको स्वयं ही करना है स्वविवेक को सुविप्ति से बाहर निकालिए, जागृत कीजिए, प्रदीप्त कीजिए, निर्णय वह कर लेगा।

22 नगर निगम क्वाटर्स
जीवाजी गंज, लश्कर,
ग्वालियर, म.प्र. 474001
दूरभाष 01751-2425931

ओजस्वी एवं क्रान्तिकारी वैदिक प्रवक्ता आचार्य ज्ञानेश्वर जी नहीं रहे

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड, गुजरात के अधिष्ठाता, ओजस्वी एवं क्रान्तिकारी वैदिक प्रवक्ता, आचार्य ज्ञानेश्वर जी का 13 नवंबर रात्रि करीब 1 बजे हृदयाघात से देहावसान हो गया। उनके देहान्त का समचार मिलते ही पूरा आश्रम शोकमग्न हो गया। यह समाचार तत्काल देशभर में फैल गया और देश-विदेश से उनके प्रशंसकों के शोक संदेश आने लगे।

बीकानेर के एक प्रतिष्ठित स्वर्णकार परिवार में जन्में आचार्य जी एम.ए. प्रथम वर्ष का अध्ययन करते हुए युवा अवस्था में ही आर्य समाज के संपर्क में आए। लगभग 25 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग किया। गृह त्याग के कुछ दिनों बाद ही आर्य जगत् की विभूति योगनिष्ठ स्वामी सत्यपति जी से संपर्क हुआ। उनके निर्देश अनुसार आर्ष गुरुकुल कालवा में आचार्य बलदेव जी नैष्ठिक के पास लगभग साढ़े छः वर्ष तक व्याकरण महाभाष्य का अध्ययन किया एवं कुछ अध्यापन भी किया।

इसके पश्चात ज्वालापुर में गुरुकुल काँगड़ी के उपकुलपति प्रो. रामप्रसाद जी वेदालंकार से निरुक्त शास्त्र का अध्ययन किया। आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने देश विदेश में सैकड़ों क्रियात्मक ध्यान योग प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से हज़ारों साधकों का अध्यात्म मार्ग प्रशस्त किया। आज आचार्य जी हमारे मध्य में नहीं रहे, परंतु उनके तपस्वी, कर्मठ, परोपकारमय जीवन व कार्यों की सुगन्ध प्रसारित है जो हज़ारों-हज़ारों महानुभावों के लिए प्रेरणा पुंज बनकर उनका मार्गदर्शन करती रहेगी। (आर्य जगत्) उनके निधन पर गहन शोक प्रकट करता है।

संपादक

श्रुति की सशक्त उजियारी– विमुक्त भागीदारी

● देव नारायण भारद्वाज

नवाचारविद् विज्ञान रत्न श्री लक्ष्मण प्रसाद जी इस महानगर ही नहीं विश्व की वरणीय विभूति हैं। अपने द्वारा रचित अनेकशः हिन्दी–अंग्रेजी ग्रन्थों की ख्याति भारत के राष्ट्रपति भवन से लेकर डॉ. जगदीश गांधी शीर्ष शिक्षाविद् के माध्यम से नवाचार ज्योति के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर चुकी है। कतिपय ग्रन्थों में उन्होंने लेखक के अध्याय भी समाहित किए हैं। प्रस्थापित संस्था वयस्वी सहयोग मण्डल के संस्थापक सदस्य ही नहीं, वे उसके मार्गदर्शक भी हैं। इस संस्था की प्रतिमाह होने वाली दो गोष्ठियों में लेखक द्वारा प्रस्तुत वेद प्रवचन को सुनकर हर्ष तो प्रकट करते ही हैं, जिज्ञासा द्वारा उसे सम्पुष्ट भी करते हैं। उन्हें और उनकी धर्म पत्नी श्रीमती उमा प्रसाद को इस तथ्य पर गर्व है कि उनका विवाह संस्कार श्रुति सौरभ विस्तारक पण्डित शिवकुमार शास्त्री ने कराया, और आज के आचार्य सुधांशु जी आर्य समाज दिल्ली के पुरोहित रहते उनके यहाँ यज्ञ कराने साइकिल पर आते थे। वैदिक यज्ञ के स्वानामधन्य दम्पति इतने प्रेमी हैं कि अन्य अवसरों के अतिरिक्त प्रतिवर्ष प्रथम जनवरी को वे अपनी कार्यशाला में सपरिवार ही नहीं, छोटे–बड़े, समस्त कर्मचारियों के साथ यज्ञ करते हैं, और सुविधानुसार लेखक को आचार्यत्व के लिए आमन्त्रित करते रहते हैं।

लेखक के प्रति विज्ञान रत्न जी निस्पृह स्नेह रखते हैं। बाबू गुलाब राय स्मृति संस्थान आगरा ने फरवरी 2014 में मुझे श्री प्यारे लाल विज्ञान लेखन सम्मान प्रदान किया था, तो स्वागत में अपने निम्न निवास पर आशीर्वाद समारोह आयोजित किया था। प्रसाद जी महान वैज्ञानिक प्रक्षेपणास्त्र पुरुष पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न डॉ. ऐ.पी.जी. अब्दुल कलाम के अनन्य प्रेमी–प्रशंसक ही नहीं, वे भी इनको अपना मित्र ही मानते रहे थे। पदमुक्त होने के बाद एक बार डॉ. कलाम को ए.एम.यू. अलीगढ़ ने दीक्षान्त भाषण के लिए आमन्त्रित किया। महामहिम ने एक दिन पूर्व पधारकर प्रशासन से प्रसाद जी के आवास पर जाकर उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। अनेक वाहनों की घण्टियाँ बज उठीं और आश्चर्य चकित होकर प्रसाद जी ने उनका सुस्वागत किया। उनका मानना है कि हृदय से सुदामा के द्वार सहृदय कृष्ण का यह शुभागमन हुआ था।

एक हाथ में राष्ट्र शत्रु संहारक बम तथा दूसरे हाथ में रुद्रवीणा संधारक शम् रखने वाले डॉ. कलाम के हर कथन को लक्ष्मण प्रसाद जी महत्वपूर्ण मानते हुए उसका लेखन एवं प्रवचन द्वारा प्रसारण करते रहते हैं। एक बार जब वे गुजरात के एक आश्रम में गए तो वहाँ के एक संन्यासी ने पूछा कि डॉ. कलाम, आप हर समय इतने ऊर्जावान एवं उत्साही कैसे रहते हैं? तो उन्होंने सहज भाव से उत्तर दिया– 'स्वामी जी, जब मैं लिफ्ट द्वारा प्रथम तल से भू तल तक आता हूँ तो उस अल्प समय में भी मैं सदैव एक ही बात सोचता रहता हूँ कि मैं देश व समाज को क्या दे सकता हूँ? जब मैं किसी बच्चे से मिलता हूँ तो मैं उसे क्या दे सकता हूँ, जिससे उसे खुशी मिले। जब मैं किसी साधू–संन्यासी से मिलता हूँ तो सदैव सोचता हूँ कि उनको क्या दे सकता हूँ? मैं सदैव सोचता हूँ कि मैं क्या दे सकता हूँ? इसी से मैं हर पल ऊर्जावान एवं उत्साहित बना रहता हूँ। उन्होंने स्वामी जी से आगे कहा कि दुनियाँ हमको बताती है कि हम दूसरों से क्या ले सकते हैं? क्या हम कभी सोचते हैं कि हम दूसरों को क्या दे सकते हैं, जिससे उनको आगे बढ़ने में सहायता मिले।

स्वामी जी ने बताया कि अहमदाबाद को ही ले लीजिए– यह एक ऐसा नगर है, जहाँ हम दूसरों से लेने की बात लगातार करते हैं और देने की बात पर हम ध्यान ही नहीं देते। जब हम किसी को कुछ देते भी हैं, तो उसके बदले में हमको क्या लाभ मिलेगा, ऐसी हमारी मानसिकता बन गयी है। ऐसी सोच में कैसे परिवर्तन लाया जा सकता है? उत्तर में डॉ. कलाम ने कहा– हमको समाज में पूर्ण रूप से सकारात्मक सोच विकसित करनी होगी, उसी सोच के द्वारा हम समाज में परिवर्तन ला सकते हैं। डॉ. कलाम इस कार्यक्रम के बाद जब बाहर जा रहे थे, तब लगभग 40 मीडिया कर्मियों ने उन्हें घेर लिया और बातचीत के लिए आग्रह किया। डॉ. कलाम ने कहा मैं आपको 'फ्री पार्टनरशिप' ग्रहण करने के लिए आमंत्रित करता हूँ सभी उपस्थित महानुभावों ने जानना चाहा कि फ्री पार्टनर शिप क्या है? डॉ. कलाम ने उत्तर दिया –बिना किसी शर्त की खूँटी गाड़े आप अपने–अपने प्रयास से देश की प्रगति में भागीदार बनें। उदाहरणतः आगे कहा कि आप अपने घर की उन्नति के साथ–साथ अपनी पत्नी की प्रगति में भागीदार बनें और आपकी पत्नी भी आपकी प्रगति में भागीदार बनने की भूमिका निभाए और परस्पर कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होनी चाहिए। इसी प्रकार आप अपने बच्चे के उन्नयन में भागीदार बनें। अपने–अपने कार्यस्थलों में अपने वरिष्ठों के साथ–साथ कनिष्ठों की उन्नति में भागीदार बनें। ऐसा सम्यक सुख सदाचरण वही व्यक्ति कर सकता है जिसकी सोच पूर्णरूपेण सकारात्मक होती है। इस संक्षिप्त वार्ता के बाद कुछ मीडिया कर्मियों ने कलाम साहब से मुस्कराने के लिए कहा। तुरन्त इसके उत्तर में उन्होंने बताया– जैसे आप मुझे मुस्कराने के लिए कह रहे हैं, वैसे ही आप के द्वारा किए गए सकारात्मक कार्य कलापों से 'देश मुस्कराए'।

डॉ. कलाम के इस गूढ़ सन्देश में बहुत कुछ छिपा है। देश तभी मुस्कराएगा जब देश का प्रत्येक नागरिक अपने–अपने कार्य को पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ समर्पित भाव से पूरा करे। चाहे छोटे–बड़े न्यायाधीश हो, पुरोहित व राजनेता हों, शिक्षक हों, चिकित्सक हों, सभी को धनलोलुपता से दूर रह कर राष्ट्र को स्वच्छ–स्वस्थ एवं सम्पन्न बनाने में अपनी भूमिका निभानी होगी। देश की नौकर शाही के साथ–साथ उद्योगपतियों को भी अपनी अहम भूमिका निभानी होगी। वैज्ञानिकों एवं टेक्नोलॉजिस्ट को भी 'देश के मुस्कराने' में नई–नई खोजों एवं उपस्कर–उपकरणों की भेंट देकर सहयोगी बनना होगा। समाज के पिछड़े–अतिपिछड़े वर्ग, श्रमिक–कृषक जन लगन तथा कठोर परिश्रम से अपने–अपने कार्यों को समर्पित भाव से करने की आवश्यकता है, जिससे उनकी खुशहाली के साथ–साथ समाज की सोच में क्रान्तिकारी परिवर्तन आएगा। 'वैज्ञानिक सन्त डॉ. कलाम' ग्रन्थ से उद्धृत ये अंश वेदोक्त सन्देश को ही सम्पुष्ट करते हैं, इसीलिए अनेक वैज्ञानिक एवं विद्वान डॉ. कलाम को राष्ट्र–ऋषि का विशेषण प्रदान करते हैं। गहन चिन्तन–मनन पूर्वक जो राष्ट्र एवं प्रजा का तारण–पारण करके सुख संधारण करता है– वही तो ऋषि होता है।

वेदान्त के मात्र दो शब्द ''त्यक्तेन भुञ्जीथा'' (यजु.40.1) त्याग पूर्वक भोग करो और ''मा गृधः'' (उक्त मन्त्र) किसी की धन–सम्पदा के प्रति लोभ–लालच से बचे। ''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतम् समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यतेनरे।।'' (यजु. 40.2) अर्थात् मनुष्य आलस्य को छोड़कर शुभ कर्मों को करते हुए और अशुभ कर्मों को छोड़ते हुए संयम पूर्वक विद्या और शिक्षा को पाकर सौ वर्षों के दीर्घ जीवन को पराक्रम पूर्वक जिए। इस प्रकार मनुष्य कृत–कर्म से अलिप्त रहते हुए उलझने नहीं पाता, फँसने नहीं पाता, किन्तु सामर्थ्य भर संसार के उपकार में लगा रहता है। यही विमुक्त भागीदारी है।

इसी परिप्रेक्ष्य में वेदभगवान की अन्य आज्ञा भी शिरोधार्य है।

मा प्र गाम पथोवयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः।
मान्त स्थुर्नो अरातयः।। अथर्व 13.1.59।।

अर्थात्– हे सर्वोत्तम ऐश्वर्यशाली परमेश्वर! (वयम्) हम (पथः) सन्मार्ग से (मा प्रगाम) कभी दूर न जाँवें, भटके नहीं। साथ ही (सोमिन्नः) सुख ऐश्वर्य प्रदाता (यज्ञात्) यज्ञ अर्थात् महान हितकारी वरिष्ठजनों का सम्मान तथा सहयोगीजनों से संगतिकरण करते हुए अपनी सामर्थ्यानुसार राष्ट्र एवं समाज के लिए अपने स्वत्व का समर्पण करते रहें। (अरातयः) अदानी कृपण मनुष्य (नः) हमारे (अन्तः) मध्य में (मास्थुः) न ठहरें। इस संकल्प का समर्थन ''अरातिर्नो मा तारीन्मा नस्तारिषुरभिमातयः'' (अथर्व 2.7.4) कहकर वेद ने किया है। अदानी–अनुदार, कंजूस–मक्खीचूस हमारा उल्लंघन न करने पाए और अभिमानी लोग भी हमें न लाँघ जाए, आगे न बढ़ने पाए।

यहाँ पर एक सुश्रुत दृष्टान्त प्रासंगिक लगता है। किसी भवन में भीषण आग लग गयी। भवन–स्वामी के साथ उसके परिजन–सखाजन बाल्टी–घड़ा लेकर दौड़ पड़े। पड़ोस में खड़े वृक्ष पर बैठी चिड़िया भी इससे अप्रभावित न रही। वह भी निकट नाली से अपनी चोंच में भरकर पानी लाती और अग्निकाण्ड तक जाती और लौटकर फिर पानी लाती व आग तक जाती। उसके इस क्रम को देखकर एक स्वार्थी कौए ने चिड़िया को संकेत किया–बहिन तुम व्यर्थ श्रम करती हो। तुम्हारी चोंच का पानी तो रास्ते में ही सूख जाता है। चिड़िया ने उत्तर दिया– भाईजी ! जितना मेरे वश में है उतना मैं करती हूँ। चुपचाप बैठकर तमाशा नहीं देख रही हूँ। जैसे आप देख रहे हैं वैसे ही भीड़ भी देखकर प्रेरणा ले रही है और हाँ, जब इस अग्निकाण्ड का इतिहास लिखा जाएगा– तो मेरी गणना आग लगाने वालों में नहीं बुझाने वालों में की जाएगी। चिड़िया को छोड़ो इसे गुड़िया ने चरितार्थ करके दिखा दिया। पंजाब के सनौर कस्बे की 13 वर्षीया हश्मिता अपने पिता के साथ राजघाट दिल्ली श्रद्धार्पण के लिए आयी वहाँ नियुक्त कर्मचारियों द्वारा विदेशी पर्यटकों से जूते रखने के स्थल पर एक रुपये के बजाए सौ रुपये लेते देख कर वह विकल हो उठी। उसे पूज्य बाबू एवं भारत की प्रतिष्ठा को दाँव पर लगाने का सन्ताप सताने लगा। कुछ और उपाय न सूझने पर मार्ग में ही इस हीन आचरण की सूचना पोस्टकार्ड मात्र से प्रधानमंत्री नईदिल्ली भेज दी। पता चला इस अवमानना पर एक सौ कर्मिक राजघाट से हटा दिए गए। यह विमुक्त भागीदारी का ज्वलन्त उदाहरण है जो दैनिक जागरण 23 जुलाई 2017 राष्ट्रीय जागरण पृष्ठ पर चमक रहा है।

हे सचिव सन्तरी मन्त्री या अधिकारी।
न लगे कलंक पड़े न कोई छापेमारी।
होकर सतर्क करके सुकर्म समझे सुमर्म,
अपनाओं हितकारी विमुक्त साझेदारी।।

'वरेण्यम्'' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.)

☞ पृष्ठ 05 का शेष

है अन्धेरी ..

उपर्युक्त तीन दोषों को आर्यसमाज से निकालना चाहिए। गाँवों में आर्यसमाज की आज आवश्यकता है। 125 वर्ष पूर्व जैसी आवश्यकता थी उससे कहीं अधिक आवश्यकता आज है। महात्मा आर्यभिक्षु जी कहा करते थे कि जिस प्रकार जन–धन की सुरक्षा के लिए गाँव में अथवा शहर के विभिन्न हिस्से में पुलिस स्टेशन की आवश्यकता रहती है, उसी प्रकार अविद्या, अभाव और अन्याय से मोर्चा लेने के लिए प्रत्येक गाँव व नगर में आर्यसमाज होना चाहिए। आर्यसमाज में एक पुरोहित की नियुक्ति की परम्परा अवश्य बननी चाहिए। आर्यसमाज के पदाधिकारी काम करने की भावना से बनें और लगातार तीन वर्ष से अधिक न रहकर अन्य सदस्यों की योग्यता को बढ़ावा दें। संयोग से नए अधिकारी अनुभवहीन हों तो भी पुराने अधिकारी सद्भावना के साथ उनका सहयोग करें। अब तो हालत यह है कि कुछ सज्जन अधिकार मिलने पर वर्षों–वर्षों पद छोड़ना नहीं चाहते और कुछ सज्जन बिना अधिकार मिले कुछ करना नहीं चाहते। दोनों ही स्थिति दयनीय हैं जिन आर्यसमाजों के बड़े भवन हैं, भवनों से जिनको आमदनी है उनकी भावना व्यापार की हो गई है। जिनके अन्तर्गत समृद्ध संस्थाएँ हैं, उन समाजों की शक्ति संस्थाओं की धन–सम्पत्ति की रक्षा में लगी है। इसका दुष्परिणाम है कि इस प्रकार के समाज अपनी सदस्य संख्या नहीं बढ़ाना चाहते। इस रोग का निवारण मिल बैठकर किया जा सकता है। समाज के अधिकारी नाम मात्र के न बन कर सरकार के मन्त्रिमण्डल की तरह दायित्व वाले कार्य करने की शपथ वाले होने चाहिएँ। समाजों का नियन्त्रण प्रतिनिधि सभाएँ करें, किन्तु प्रतिनिधि सभायें भी समाजों से गए हुए प्रतिनिधियों द्वारा गठित होवें। आज हालत यह है कि प्रतिनिधि सभाओं के इर्दगिर्द कुछ इने–गिने व्यक्ति कब्जा जमाकर मनमाना चुनावी खेल खेलते हैं। प्रतिनिधियों के ऊपर सार्वदेशिक सभा का संगठन बहुत उत्तरदायित्व और प्रतिष्ठा वाला है। इसके अधिकारी आर्यसमाज के लिए जीवनदायी व्यक्ति होने चाहिएँ। महिलाओं को भी प्रमुखता देकर नारी शिक्षा, दहेज कुप्रथा निवारण का काम होना चाहिए।

संन्यासी वर्ग की भी आचार संहिता बननी चाहिए। समस्त गुरुकुलों का एक सबल केन्द्रीय नियन्त्रण कक्ष होना चाहिए। देश के विभिन्न क्षेत्रों से प्रकाशित आर्यसाहित्य व पत्र–पत्रिकाओं के लिए पंजीकरण का एक विभाग होना चाहिए। प्रदूषण से पीड़ित संसार को समझने के लिए वैदिक रीति से अग्निहोत्र के विस्तार का एक स्वतन्त्र संस्थान होना चाहिए। इन सबसे महत्वपूर्ण मंच वह होना चाहिए जो आर्यसमाज के दीवानों, जीवनदानियों और दयानन्द के अरमानों को समझने वाले युवक–युवतियों को दिशा बोध देता रहे, जिनको धन का लोभ, सरकारी गद्दी और पारिवारिक मोह डगमगा न सके। निश्चय ही इनकी संख्या अल्पतम होगी पर चिन्ता नहीं उनका ध्येय होना चाहिए।

है अन्धेरी रात, पर दीपक जलाना कब मना है।

श्री गजानन्द आर्य अभिनन्दन ग्रन्थ से साभार

पत्र/कविता

महान् आर्य प्रचारकों ने प्रतिकूल परिस्थितियों में कैसे किया होगा वेदप्रचार

(म्यांमार से एक पत्र)

सा. आ. प्र. सभा द्वारा आयोजित अ.आ.म. सम्मेलन की सूचना मिली किन्तु अनेक कारणों से इसमें भाग लेने का अवसर मिला। क्वालालम्पुर, रंगून, माण्डले–ब्रह्मदेश की धरती पर वैदिक धर्मा के प्रचारार्थ 120 पूर्व बनी आर्य समाजों तथा आर्यजनों आर्य परिवारों को देख सुन, जानकर मन में आशातीत प्रसन्नता हुई।

बर्मा में पिछले 40 वर्षों तक तो सेना का शासन रहा है। 100 वर्ष पूर्व भारतवर्ष के महान् तपस्वी, साहसी, पुरुषार्थी, जुझारू आर्य प्रचारकों ने, अंग्रेजों के अधीन देश में, अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में, अनेक प्रकार के अभाव–कष्टों को झेलकर, सुदूर जंगलों में कैसे वेद धर्म का प्रचार किया होगा, यह सोचकर तो हृदय सिहर जाता है। उनमें एक दीवानगी थी, उन्होंने तो शत्रु के साथ युद्ध करने वाले साहसी सैनिक के समान, अपमान–कष्ट–अन्याय–अत्याचार–मृत्यु तक ही परवाह किये बिना, इस देश में वेद धर्म की दुंदुभि बजायी थी, ये सब बातें पढ़–सुन–जानकर उनके प्रति अतीव श्रद्धा भाव हृदय में उमड़ जाता है और आंखों में प्रेम के आंसू निकल आते हैं। आज हम, अपनी तुलना उनसे करते हैं तो सिर झुक जाता है, अभिमान नष्ट हो जाता है।

यज्ञ वेदी पर बैठे हुवे मैंने जब, एक–एक हवन कुण्ड पर 20–20, 30–30 की संख्या में सुन्दर–स्वच्छ वस्त्रों तथा स्वर्णाभूषणों से सुशोभित माताओं–बहिनों तथा युवाओं को स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण तथा बृहद यज्ञ के मंत्रों का शुद्ध स्पष्ट उच्चारण सुना तो हृदय हर्षातिरेक से भाव विभोर हो गया। भारत तथा अन्य देशों से आये अभ्यागतों का स्वागत, सत्कार, भोजन सेवा, अभिवादन, भेंट प्रदान आदि व्यवहारों को देखकर अन्तःकरण पुलकित हो गया। ब्रह्मदेश के आर्यों ने तो हम भारतीयों के लिए आंखें बिछा दीं उनके लिए जीवन में प्रथम ही ऐसा सम्मेलन था किन्तु मैंने भी ऐसा अद्भुत, आह्लादकारी, प्रेरक, अनुकरणीय सम्मेलन प्रथम वार ही देखा था, यह मेरी 18वीं प्रचार यात्रा है।

वस्तुतः इस महासम्मेलन को सफल बनाने में न केवल सभा के युवा कर्मठ पदाधिकारियों ने अथक पुरुषार्थ किया अपितु म्यांमार=बर्मा के स्थानीय आर्य समाजों के, श्रद्धान्वित, तपस्वी, त्यागी आर्य सज्जनों ने भी तन–मन–धन से स्तुत्य परिश्रम किया। उनकी 40–50 वर्षों की मन में छिपी हुवी कल्पनाएं–स्वप्न आज पूरे हुवे। विदाई के समय तो ब्रह्मदेश के आर्यजनों विशेषकर माताओं तथा बहिनों के नेत्रों से अश्रधारा बह रही थी, वे सभी भाव विभोर हो रहे थे।

जैसे कि पूर्व पत्रों में भी मैंने संकेत किया, आज प्रत्येक आर्य के मन में वर्तमान की वेद धर्म के सतत् ह्रास, तथा अवैदिक मत पंथों के तीव्रता से प्रसार–प्रचार की स्थिति को देखकर मन में खिन्नता, विषाद, चिन्ता आशंका बनी हुई है कि भविष्य में क्या होगा? तर्क–युक्ति–प्रमाण–न्याय विज्ञान से रहित पंथों में लोग सम्मिलित होते जा रहे हैं यह कैसी विडम्बना है!!! शास्त्रकार कहता है "यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोत्रदोषः" यदि प्रयास करने पर भी कार्य सिद्ध नहीं होता है तो कमियों को ढूँढ़ना चाहिए। इसी दृष्टि से कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहा हूँ।

विद्वानों, प्रचारकों, दानदाताओं, प्रबन्धकों, कार्यकत्ताओं के परस्पर सम्मेलन होने चाहिएँ, जिसके एक दूसरे के प्रति श्रद्धा विश्वास, प्रेम, निष्ठा उत्पन्न हो, दूसरों के महत्व, उपयोगिता, आवश्यकता, लाभ आदि को समझ सके, एक दूसरे के सहयोगी बनें।

समाजों में साप्ताहिक सत्संग के स्थान पर दैनिक सत्संग किया जाये जिससे 7 दिनों में 15–20 घण्टे अपनी अनुकूलता से किसी भी दिन यज्ञ, संध्या, भजन, सत्संग, स्वाध्याय आदि का अवसर मिल सके।

समाजों में संध्या–यज्ञादि के अतिरिक्त विद्यालय का संचालन, औषधालय की सुविधा, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, प्राणायाम, आसन, जप व्यायाम, भाषण, गीत, संगीत, चित्रकला, लेखन, यज्ञ–ध्यान आदि का प्रशिक्षण देते हेतु शिविर–सेमीनार कार्यक्रम आयोजित किये जायें, जिससे अनायास ही लोग समाज में आयेंगे, जुड़ेंग तथा सहयोगी बनेंगे।

परमेश्वर से विन्रम प्रार्थना है कि वह अपनी कृपाकटाक्ष से हम आर्यों में, वेद धर्म को, सम्पूर्ण विश्व में शीघ्र ही प्रचार प्रसार हेतु दिव्यभावना उत्पन्न करें, जिससे हम किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति को देखकर निराश न हों, अकर्मण्य न बनें।

जूआनेश्वरार्यः

****

आर्यो! देश बचाओ

स्वामी दयानन्द बन जाओ, करो राष्ट्र उद्धार, आर्यो! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यो! देश बचाओ।।
किसी समय भारत में घर–घर, यज्ञ–रचाए जाते थे।
संन्यासी विद्वान तपस्वी, वैदिक कथा सुनाते थे।।
ईश्वर भक्त निराले थे, करते थे सद्व्यवहार, आर्यो! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यो! देश बचाओ।।
राम कृष्ण से महापुरुष थे, अर्जुन से थे वीर यहां।
चन्द्रगुप्त विक्रम जैसे थे, देश भक्त रणधीर यहां।।
जो कहते थे, करते थे वे, भारत से था प्यार, आर्यो! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यो! देश बचाओ।।
पाखण्डी बढ़ गये देश में, जनता को बहकाते हैं।
ईश्वर की पूजा छुड़वाकर, निज पूजा करवाते हैं।।
कोठी बंगलों में रहते हैं, दगाबाज मक्कार, आर्यो! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यो! देश बचाओ।।
माता–पिता, दादा–दादी की, होती नहीं यहां सेवा।
वृद्ध जनों की सेवा से, मिलता है यश रूपी मेवा।।
बिगड़ गया है, युवक–युवतियों का आचार–विचार, आर्यो! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यो! देश बचाओ।।
एक–एक फुट धरती पर, लड़ते हैं भाई–बहिन यहां।
अज्ञानी बन गए अभागे, तनिक न करते सहन यहां।।
आपाधापी मची हुई, चहुंदिश है मारामार, आर्यो! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यो! देश बचाओ।।
नेता है बेशर्म शराबी, खाते अण्डे मांस यहां।
धूर्त स्वार्थी हत्यारों का, कौन करे विश्वास यहां।।
धन–संग्रह में लगे हुए हैं, भूल गए करतार, आर्यो! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यो! देश बचाओ।।
देश–धर्म से प्यार नहीं है, करते हैं नित घोटाले।
आस्तीन में छिपकर बैठे, नाग पौनियां हैं काले।।
गउओं की गर्दन पर नित, चलती है, यहां कटार, आर्यो! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यो! देश बचाओ।।
दयानन्द के वीर सैनिको! कर्मक्षेत्र में बढ़ जाओ।
बनो लाजपत, बिस्मिल, शेखर, काम करो आगे आओ।।
"नन्दलाल निर्भय" दुष्टों का, कर दो अब संहार, आर्यो! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यो! देश बचाओ।।

पं. नन्दलाल निर्भय, भजनोपदेशक,
आर्य सदन बहीन, पलवल (हरियाणा),
मो. 9813845774

क्या हिन्दू धर्म विधवाओं को नवजीवन देने को तैय्यार होगा

वृंदावन के विधवा आश्रम में दिवाली से एक सप्ताह पूर्व प्रसन्नता का माहौल गर्मा गया। एक विधवा महिला ने पुर्नविवाह कर विधवा आश्रम में निवास कर रही पाँच सौ से ज्यादा विधवाओं के चेहरे पर खुशी की लहर पैदा कर दी।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विधवा के पुनर्विवाह के आह्वान की प्रेरणा से वृन्दावन की विधवा आश्रम में शरणागत विधवा महिला ने पुर्नविवाह किया। इस महिला के पति 2013 में केदारनाथ घाटी में आई प्राकृतिक विपदा में मौत को प्राप्त हो गए थे। इस साहसिक महिला ने तदुपरान्त वृंदावन में विधवा आश्रम में शरण ले ली थी। परिवारजनों के सहयोग से जीवनसाथी का चुनाव कर धार्मिक रीति से विवाह का गठबन्धन सूत्र किया। समारोह में आश्रम में निवास कर रही पाँच सौ से ज्यादा संवासनियों के चेहरे पर नई उत्साह देखने को मिली और एक नई राह का मार्ग प्रशस्त हुआ।

हिन्दू धर्म में पुनर्विवाह अभिशाप माना जाता रहा है। परन्तु एक सदी पूर्व स्वामी जी ने समस्त हिन्दू धर्म में पुनर्विवाह का स्वागत करने का प्रयास किया था उसके परिणामस्वरुप पुनर्विवाह का समाज आदर और सम्मान देने लगा।

यह खेद है कि हिन्दू धर्म के ही अतिरिक्त अन्य धर्मों में पुर्नविवाह की परम्परा कायम है। ईसाई धर्म में तो पुर्नविवाह की परम्परा बहुत ज्यादा है।

क्या वृंदावन में आयोजित हुए इस कार्यक्रम को देश के समस्त हिन्दूधर्म अनुयायी सहर्ष स्वीकार कर वृंदावन की सैंकड़ों विधवाओं को नया जीवन देने को आतुर रहेगा।

देश के समस्त आर्य विद्वानों से विनम्र निवेदन है कि देश में विधवाओं को नई जिंदगी प्रदान करने के उद्देश्य से इस प्रकार के कार्य क्रमों को प्रोत्साहित करें।

कृष्ण मोहन गोयल
113– बाजार कोट,
अमरोहा (उ.प्र.)

****

बी.डी. डी.ए.वी. धर्मशाला में मनाया गया महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

डी.ए.वी. धर्मशाला में आर्य युवा समाज हिमाचल प्रदेश के मंत्री श्री एस.एच. खान जी की अध्यक्षता में महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें आर्य–युवा समाज के सदस्य और विद्यालय के छात्रों, अध्यापकों ने भाग लिया। आर्य युवा समाज के सदस्यों ने वैदिक–भजनों के माध्यम से पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। छात्रों ने महर्षि–दयानन्द के जीवन–चरित्र और समाज में किए गए उनके कार्यों के ऊपर अपने विचार रखे।

विद्यालय के प्रधानाचार्य एस.एच. खान जी के अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज की स्थापना के पीछे महर्षि दयानन्द जी का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना था। हम दूसरों का भला किस प्रकार कर सकें? अंधविश्वास, जात–पात, नशा जैसी कुरीतियों से इस समाज को निकालना है। जब वेदों की जगह पुराणों का पठन–पाठन व बोल–बाला था उस समय महर्षि दयानन्द जी ने वेदों का अलख जगाया था। स्त्री–शिक्षा, विधवा–विवाह के प्रति उनकी सकारात्मक–सोच और इसके लिए विशेष अभियान इसी का परिणाम है कि आज नारी प्रत्येक क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित

कर रही है। इसी विचारधारा से हम लोगों को जागरूक करें, वैदिक–धर्म का प्रचार–प्रसार करें, यही महर्षि जी के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांज्जलि होगी। शांति–पाठ और प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

डी.ए.वी. जनकपुरी में लगी वार्षिक प्रदर्शनी

ए स. एल. सूरी डी. ए. वी. जनकपुरी में वार्षिक प्रदर्शनी (प्रतिभांजली) का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डी. ए. वी. कॉलेज प्रबंधकर्ती समिति की डाइरेक्टर (पब्लिक स्कूल्स) डॉ. निशा पेशिन द्वारा किया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती अनु अरोड़ा एवं उपस्थित गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का आगाज सर्वधर्म सद्भाव की प्रार्थना एवं डी. ए. वी. गान द्वारा किया गया ।

प्रदर्शनी का केंद्र विषय था ट्रान्सेंडिंग बाउण्डरीज़ इसके अंतर्गत प्राथमिक से उच्च कक्षाओं तक के सभी विषयों को सम्मिलित किया गया । साथ ही साथ नाटक, संगीत, नृत्य,कला, इको क्लब, योग,कम्प्यूटर, पुस्तकालय तथा प्राथमिकी चिकित्सा के क्षेत्र में भी छात्रों ने बढ़ –चढ़ कर हिस्सा लिया । प्रदर्शनी मे आयें विशिष्ट अतिथि श्री आर. एस. शर्मा जी जनरल सेक्रेटरी डी. ए. वी. कॉलेज प्रबंधकर्ती समिति, विद्यालय के चेयरमेन श्री बलदेव जिंदल जी, विद्यालय मेनेजेर श्री विनोद शर्मा जी एवं अनेक विद्यालयों से आए प्रधानाचार्य, शिक्षकों, छात्रों,

अतिथियों, एवं अभिभावकों ने प्रदर्शनी में सम्मिलित होकर विद्यालय की शोभा को बढ़ाया तथा छात्रों को अभिप्रेरित करते हुए अपनी वैचारिक भावनाओं को सांझा किया ।

श्रीवत्स जयन्ती गोरक्षा आश्रम तनरडा (ओड़िशा) में चरित्र निर्माण शिविर हुआ सम्पन्न

ओड़िशा प्रदेश के सर्वप्रथम आर्यसमाजी, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कारविधि आदि ऋषिकृत ग्रंथों का ओड़िशा भाषा के आद्य अनुवादक श्री वत्स पण्डा का 148वां जयन्ती महोत्सव तनरडा गोरक्षा आश्रम के मन्त्री, आर्यजगत् के युवा वैदिक विद्वान, गुरुकुल हरिपुर के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य के कुशल संयोजकत्व में एवं आश्रम के समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के प्रबल पुरुषार्थ से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। जयन्ती समारोह कार्यक्रम में गुरुकुल वेदव्यास राऊरकेला के अधिष्ठाता डॉ. देवव्रत आचार्य, इ. प्रियव्रत दास, माता शन्नोदेवी आदि तथा ओड़िशा के विभिन्न आर्यसमाजों से शताधिक आर्यमहानुभाव उपस्थित थे।

श्रीवत्स जयन्ती समारोह के अवसर पर तनरडा आश्रम में ही त्रिदिवसीय चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें लगभग सौ प्रबुद्ध युवा शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण देने हेतु डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य, गुरुकुल हरिपुर, स्वामी दयानन्द मुक्तानन्द परिव्राजक, राजस्थान, व ब्र. वामदेव आर्य केरल से एवं मन्त्रोच्चारण व यज्ञ व्यवस्था आदि हेतु गुरुकुल हरिपुर के ब्रह्मचारी उपस्थित थे।

वैदिक सिद्धान्त, यज्ञ, योग, आध्यामिकता की ओर से भटकती युवा पीढ़ी को जीवन निर्माण करने की कला सिखाने तथा उनके अन्दर वैदिक सिद्धांतों के प्रति श्रद्धा भाव जगाने के उद्देश्य से इस शिविर का आयोजन किया गया था, अनेक शिविरार्थी दैनिक अग्निहोत्र करने और ऋषिकृत ग्रंथों के अध्ययन का संकल्प लेकर गये। शिविर अपने उद्देश्यों में सफल रहा।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 15/16-11-2017

डी.ए.वी. बिलगा में मनाया गया राष्ट्रीय एकता दिवस

एच.आर.टी. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल में 'भारत स्काऊट एवं गाईड' यूनिट द्वारा स्कूल में राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। समारोह के प्रारंभ में स्कूल के प्रिंसिपल रवि शर्मा ने सभी विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास करने की शपथ दिलाई। उसके बाद शांति का संदेश से ओत-प्रोत एक नृत्य प्रस्तुत किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता प्रदर्शित करते हुए 'पोस्टर मेकिंग' का भी आयोजन किया गया।

यह दिवस सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, अतः इस अवसर पर उनके जीवनकाल से संबंधित क्विज कंपीटिशन भी करवाया गया। इस अवसर पर स्कूल के प्रिंसिपल रवि शर्मा ने विद्यार्थियों को प्रेरणा देते हुए कहा कि देश की एकता एवं अखंडता की रक्षा करना हम सब नागरिकों का कर्तव्य है। इसके लिए हमें अपना तन-मन-धन न्योछावर करने के लिए हमेशा तैयार रहना होगा।

समारोह में भारत सरकार 'स्काऊट एंड गाईड यूनिट' की गाईड कैप्टन श्रीमती ऋतु मल्होत्रा एवं स्काऊट मास्टर बलवीर सिंह और कब मास्टर राजेश कुमार भी उपस्थित थे।

बी.आर.एल. डी.ए.वी. भंडारीदह (बोकारो) ने मनाया पर्यटन महोत्सव

विद्यालय की प्रार्थना सभा में अंतरसदनीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों ने जोर-शोर से भाग लिया।

आर्यभट्ट सदन द्वारा पंजाब की सभ्यता एवं संस्कृति की झलक प्रस्तुत की गई तथा इसके दर्शनीय स्थलों का दिग्दर्शन बच्चों द्वारा कराया गया जैसे- अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, गुरुनानक देव के चित्र सहित वहां की लोक संस्कृति, सभ्यता, रहन-सहन, बोलचाल की भाषा, उनके लोकनृत्य-गिद्दा एवं भांगड़ा का दिग्दर्शन। रमन सदन द्वारा झारखंड प्रदेश का दिग्दर्शन कराया गया। विद्यालय के बच्चों ने इसकी भव्य झांकी प्रस्तुत कर दर्शकों का मन मोह लिया। टैगोर सदन द्वारा

आंध्रप्रदेश का दिग्दर्शन कराया गया। जिसमें आंध्रप्रदेश की लोक संस्कृति की झलक, रहन-सहन, वेश-भूषा, लोक नृत्य आदि के माध्यम इसकी समृद्ध संस्कृति का अवलोकन कराया गया। पर्यटन स्थलों में चारमिनार, तिरूपति बालाजी मंदिर, शमोजी फिल्म सिटी का दिग्दर्शन किया जा सकता है। श्रद्धानंद सदन द्वारा राजस्थान की समृद्ध लोक संस्कृति की भव्य झांकी प्रस्तुत की गई। इसके पर्यटन स्थलों में गुलाबी शहर जयपुर, हवा महल, आमेर का किला, गलमहल आदि हैं।

इस अवसर पर बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया था। शैक्षिक भ्रमण हेतु बच्चों को बोकारो शहर के जैविक उद्यान ले जाया गया। जहाँ पर विद्यालय के आठवीं कक्षा के बच्चों ने अपने गाइड शिक्षकों के साथ विभिन्न प्रकार की जानकारी प्राप्त की।

विद्यालय के प्राचार्य श्री एस.एस. हाजरा ने प्रतिभागी बच्चों एवं शिक्षकों के प्रयासों की सराहना की एवं अन्य बच्चों से भी इस तरह के कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु आग्रह किया।

डी.ए.वी. एडवर्ड गंज मलोट के छात्र पहुंचे बस्तियों में

डी.ए.वी. एडवर्ड गंज सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल मलोट द्वारा दीवाली के पवित्र त्यौहार पर धर्म शिक्षक रामचंद्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया। विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और स्वामी दयानंद जी के जीवन से संबंधित अनेक प्रेरक प्रसंग सुनाकर उस पर चलने के लिए प्रेरित किया गया। विद्यालय की छात्राओं एवं अध्यापकों द्वारा भजन और गीत प्रस्तुत किए गए। छात्रों ने सभी को प्रेम और भाईचारे के साथ प्रदूषण मुक्त दिवाली मनाने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर एक रैली निकाली गई जो विद्यालय से शुरू होकर मलोट शहर के विभिन्न भागों, गलियों से होती हुई अंत में विद्यालय के प्रांगण में ही समाप्त हुई। विद्यार्थियों ने शहरवासियों को प्रदूषण मुक्त दिवाली मनाने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य जी.सी. शर्मा जी ने अपने संबोधन में कहा कि आज ही के दिन आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद जी का निर्वाण हुआ था जिन्होंने समाज को नई दिशा व दशा प्रदान की। उन्होंने मूर्ति पूजा, बाल विवाह, दहेज प्रथा, सती प्रथा, पाखंडवाद का समूल नाश कर वेदों की पुनः स्थापना की। उन्होंने सबसे बड़ा उपकार नारी जाति पर किया।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी विद्यालय के छात्र गरीब बस्तियों में गए और बिस्कुट, मिठाईयां एवं फलों आश्रम और गरीब बस्ती के निवासियों को बाँटकर उनको खुशी प्रदान की।

मुख्य अतिथि श्रीमती निशा शर्मा ने कहा कि स्वामी दयानंद जी ने ऊंच नीच का भेद भाव एवं जाति प्रथा से लोगों को ऊपर उठने के प्रेरित कर, समाज

में फैली द्वेष भावना को दूर करने का प्रयास किया। अंत में अपने मारने वाले रसोइए को भी उन्होंने पैसे देकर नेपाल भगा दिया था। ऐसे दयालु थे स्वामी दयानंद जी।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू-30, ओखला, फेस-II, नई दिल्ली-110020 (दूरभाष : 26388830-32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.-9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**